कर न कर

सम्पादक

हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब (र.अ)

पुरुषों, स्त्रियों, तथा बच्चों के लिए
ईमान, रहन - सहन, समाज, शिक्षा, नैतिक तथा
धर्म सम्बन्धी नसीहतें

KAR NA KAR

DO'S & DON'TS

Information about permissibles and not permissibles

कर न कर

सम्पादक

हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब (र.अ)

पुरुषों, स्त्रियों, तथा बच्चों के लिए

ईमान, रहन - सहन, समाज, शिक्षा, नैतिक तथा

धर्म सम्बन्धी नसीहतें

प्रकाशक

नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान,

ज़िला- गुरदासपुर (पंजाब)

Ver 2016.04.17/02

पुस्तक का नाम	: कर न कर
Name of the Book	: KAR NA KAR
सम्पादक	: हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब (र.अ)
	: Hazrath Dr. Mir Mohammad Isma-il Sahib (Rz)
अनुवादक	: अन्सार अहमद, एम.ए.बी.एड., आनर्स अरबिक
Translator	: Ansar Ahmad, M.A., B.Ed., Hon's in Arabic
प्रकाशन वर्ष	: प्रथम संस्करण हिन्दी 2016
	: 1st Edition in Hindi 2016
संख्या	: 1000
Quantity	: 1000
प्रेस	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान.
Press	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian.
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, ज़िला- गुरदासपुर (पंजाब)
	: Nazarath Nashr-o-Ishat Qadian, Dist: Gurdaspur (Punjab)

ISBN

Ver 2016.04.17/02

विश्व के सबसे महान दार्शनिक मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल्म के नाम समर्पित

Ver 2016.04.17/02

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

प्राक्कथन

कुछ समय से मेरा विचार था कि छोटे और साधारण वाक्यों में इस्लामी आदेशों एवं निषेधादेशों को इस प्रकार वर्णन किया जाए कि साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति या चौथी, पांचवी कक्षा का विद्यार्थी भी स्वास्थ्य-सुरक्षा, सभ्यता, रहन-सहन, मामले, शिष्टाचार एवं इस्लामी जीवन के धर्म से संम्बधित आदेशों को समझ सके। इसके साथ ही यह प्रबन्ध भी किया जाए की यह पुस्तिका फिकः की पुस्तक न बन जाए, न उसमें हवाले हों, जिन्हें जनसाधारण समझ नहीं सकते, न आदेशों की दार्शनिकता का उल्लेख किया जाए ताकि बच्चों तथा स्त्रियों के लिए भी आसानी रहे। केवल सरसरी तौर पर वर्णन हो जो यद्यपि हवालों तथा प्रमाण के बिना हो, किन्तु हो प्रमाणित। इस में अधिकतर युवाओं तथा बच्चों का ध्यान रखा गया है, किन्तु स्त्रियां और बड़े लोग भी यदि चाहें तो लाभ उठा सकते हैं। वर्णन शैली नवीन प्रकार की है परन्तु हमारी धार्मिक परम्पराओं के अनुकूल है और तू का शब्द केवल प्रेम को प्रकट करने एवं भलाई के कारण प्रयुक्त किया गया है।

जब इस पुस्तिका का मसौदा पूर्णता को पहुंच गया तो एक दिन संयोग से जबकि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुराने ggविज्ञापन पढ़ रहा था तो ज्ञात हुआ कि आप (अ) ने पंडित खड़क सिंह आर्य के मुक़ाबले पर एक विज्ञापन में इस किताब, नियम तथा शैली पर संक्षेप में पवित्र क़ुरआन के कुछ आदेश लिखे थे, जिन्हें देखकर ज्ञात होता है कि आप (अ) भी इस लेखन शैली को धार्मिक शिक्षा तथा इस्लाम के प्रचार के लिए लाभप्रद समझते थे। मैं बरकत के तौर पर आप (अ) की उस सम्पूर्ण इबारत को नीचे लिख देता हूँ

ताकि इसके कारण हमारी जमाअत के युवा इस पुस्तिका की ओर रुचिपूर्वक आकृष्ट हों तथा किसी मित्र को इस लेखन शैली पर आपत्ति हो तो वह भी दूर हो जाए:-

अतः हुज़ूर अलैहिस्सलाम का कहना है :-

(1) तुम ख़ुदा को अपने शरीरों एवं आत्माओं का प्रतिपालक समझो, जिसने तुम्हारे शरीरों को बनाया। उसी ने तुम्हारी आत्माओं का भी सृजन किया, वही तुम सब का स्रष्टा है। उसके बिना कोई वस्तु मौजूद नहीं हुई।

(2) आकाश और पृथ्वी तथा सूर्य और चंद्रमा तथा जितनी ने'मतें पृथ्वी एवं आकाश में दिखाई देती हैं ये किसी कर्म करने वाले का कर्मफल नहीं है, मात्र ख़ुदा की दया है। किसी को यह दावा नहीं पहुंचता कि मेरी नेकियों के प्रतिफल में ख़ुदा ने आकाश बनाया, पृथ्वी बिछाई या सूर्य को पैदा किया।

(3) तू सूर्य कि उपासना न कर। तू चंद्रमा की पूजा न कर। तू अग्नि की उपासना न कर। तू पत्थर की उपासना न कर। तू बृहस्पति नक्षत्र की न पूजा कर, तू किसी मनुष्य या किसी अन्य भौतिक वस्तु को खुदा न समझ कि ये समस्त वस्तुएं ख़ुदा ने तेरे लाभ के लिए पैदा की हैं।

(4) खुदा तआला के अतिरिक्त किसी वस्तु की आधारभूत तौर पर प्रशंसा न कर कि समस्त प्रशंसाएं उसी की ओर लौटने वाली हैं। उसके अतिरिक्त किसी को उसका माध्यम न बना कि वह तुझ से तेरी प्राण धमनी से भी अधिक निकट है।

(5) तू उसे एक समझ कि जिस का कोई हमतुल्य नहीं। तू उसको सामर्थ्यवान समझ जो किसी प्रशंसनीय कार्य से असमर्थ नहीं। तू उसे दायालु एवं दानशील समझ कि जिसकी दया और दान पर किसी कार्य करने वाले के कर्म को प्राथमिकता नहीं।

(6) तू सत्य बोल और सच्ची गवाही दे, चाहे अपने सगे भाई पर

हो या पिता पर हो या माता पर हो या किसी अन्य प्रियजन पर हो और सच्चाई की ओर से पृथक मत हो।

(7) तू हत्या न कर, क्योंकि जिसने एक निर्दोष को मार डाला वह ऐसा है कि मानो उसने समस्त संसार को मार डाला।

(8) तू सन्तान का वध न कर। तू अपने आप को स्वयं क़त्ल न कर। तू किसी हत्यारे अथवा अत्याचारी का सहायक न बन। तू व्यभिचार न कर।

(9) तू कोई ऐसा कार्य न कर जो दूसरे के अकारण कष्ट का कारण हो।

(10) तू जुआ न खेल। तू मदिरापान न कर, तू ब्याज न ले और जो तू अपने लिए अच्छा समझता है वही दूसरे के लिए कर।

(11) तू उस पर जिस से निकाह वैध है कदापि आंख न डाल, न कामवासना से न अन्य किसी दृष्टि से, कि यह तेरे लिए ठोकर खाने का स्थान है।

(12) तुम अपनी स्त्रियों को मेले तथा सभाओं में मत भेजो तथा उनको ऐसे कार्यों से बचाओ जहाँ वे नग्न दिखाई दें। तुम अपने स्त्रियों को आभूषण छनकाते हुए सुन्दर तथा चित्ताकर्षक लिबास में गलियों, बाज़ारों तथा मेलों में घूमने से रोको और उन्हें उनकी दृष्टि से बचाते रहो जिन से निकाह वैध है। तुम अपनी स्त्रियों को शिक्षा दो तथा धर्म और बुद्धि तथा ख़ुदा से भय में उन्हें परिपक्व करो और अपने परिवार के बच्चों को पढ़ाओ।

(13) जब तू न्यायकर्ता होकर कोई न्याय करे तो न्यायपूर्वक कर और रिश्वत (घूस) न ले और जब तू गवाह होकर आए तो सच्ची गवाही दे और जब तेरे नाम न्यायकर्ता की ओर से किसी अदायगी के लिए आदेश जारी हो तो साबधान, उपस्थित होने से इन्कार मत करना तथा अवज्ञा मत करना।

(14) तू ग़बन मत कर, तू कम न तौल तथा पूरा-पूरा तौल। तू खोटी वस्तु को अच्छी वस्तु के स्थान पर परिवर्तित न कर। तू जाली दस्तावेज न बना। तू अपने लेख में जाली काम न कर। तू किसी पर लांछन मत लगा और किसी को दोष न लगा कि जिस का तेरे पास कोई प्रमाण नहीं।

(15) तू चुग़ली न कर, तू शिक्वा (उलाहना) न कर, तू पिशुनता न कर और जो तेरे हृदय में नहीं वह मुख पर न ला।

(16) तुझ पर तेरे माता-पिता का अधिकार है जिन्होंने तेरा पालन-पोषण किया। भाई का अधिकार है, उपकारी का अधिकार है, सच्चे मित्र का अधिकार है, पड़ोसी का अधिकार है, देशवासियों का अधिकार है, सम्पूर्ण विश्व का अधिकार है। सबसे पदों की दृष्टि से सहानुभूति का व्यवहार कर।

(17) भगीदारों के साथ लेन-देन में ख़राब व्यवहार मत कर। अनाथों तथा असहायों के धन को बरबाद न कर।

(18) गर्भपात न कर, हर प्रकार के व्यभिचार से बच। किसी स्त्री के सतीत्व को खराब करने के लिए उस पर कोई इल्ज़ाम न लगा।

(19) ख़ुदा की ओर झुक, संसार की ओर झुकने वाला न हो कि संसार एक गुज़र जाने वाली वस्तु है और वह संसार (परलोक) अनश्वर संसार है। पूर्ण प्रमाण के बिना किसी पर अशिष्ट आरोप न लगा कि हृदयों, कानों और आखों से क़यामत के दिन हिसाब-किताब लिया जाएगा।

(20) किसी से कोई वस्तु ज़बरदस्ती न छीन। क़र्ज़ को यथा समय अदा कर और यदि तेरा क़र्ज़दार गरीब है तो उसका क़र्ज़ क्षमा कर दे और यदि इतनी सामर्थ्य नहीं तो किस्तों में वुसूली कर, परन्तु तब भी उसकी क्षमता और सामर्थ्य देख ले।

(21) किसी के धन में लापरवाही से क्षति न पहुंचा तथा भलाई के कार्यों में लोगों को सहायता दे।

(22) अपने सहयात्री की सेवा कर तथा अपने मेहमान का आदर-सत्कार कर। मांगने वाले को खाली न जाने दे और प्रत्येक प्राणी, भूखे-प्यासे पर दया कर।

(हयात-ए-अहमद जिल्द-3 पृष्ठ- 25 - 27)

अतः इसी आदर्श पर तथा इसी व्याख्या के लिए मैं ने यह पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक पहली बार जल्सा सालाना 1945 ई. के अवसर पर छपी थी और तीन-चार दिन में सब की सब हाथों हाथ निकल गई। अब द्वितीय संस्करण संशोधन के पश्चात् और अधिक उत्तम तौर पर प्रकाशित किया जा रहा है। अल्लाह तआला इसे पाठकों के लिए लाभप्रद बनाए। आमीन

इस संस्करण में यौन संबंधी बातों को पृथक करके अन्त में संकलित कर दिया गया है। इस प्रकार से यह पुस्तक न केवल बड़ी आयु के लोगों के काम आ सकेगी अपितु स्कूलों के लड़के और लड़कियां भी इसे निःसंकोच पढ़ सकेंगे अर्थात् यदि यह पुस्तक किसी लड़के या लड़की के हाथ में देनी हो तो अन्तिम पृष्ठ पर सादा कागज़ चिपका दें।

विनीत

मुहम्मद इस्माईल अस्सुफ्फः

क़ादियान

दिनांक 12, माह अमान, 1325 हिज्री

विषय सूची

Ver 2016.04.17/02

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم
ख़ुदा की कृपा एवं दया के साथ

1. शरीर एवं स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी

✻ तू अपने शरीर को सदैव पवित्र और स्वच्छ रख।

✻ तू मल-मूत्र के पश्चात् हमेशा अंगों को साफ किया कर।

✻ तू अपने दाँतों को दातून या मंजन से प्रतिदिन साफ किया कर।

✻ तू अपने सिर के बालों को नियमित रूप से कटवाया कर।

✻ तू अपनी मूछें कतरवा कर छोटी रखा कर ताकि वह पीने कि वस्तुओं में न पड़ें।

✻ तू कोई अनुचित कार्य अपने अंगों मे न किया कर।

✻ तू कम से कम जुमा (शुक्रवार) के दिन अवश्य स्नान किया कर और संभव हो तो प्रतिदिन स्नान कर।

✻ तू अपने लड़के का ख़तना करा।

✻ तू नियमित रूप से शारीरिक व्ययाम की आदत डाल।

✻ तू अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख कि ईमान के पश्चात् स्वास्थ्य बड़ी ने'मत है।

✻ तू अपने बालों को कंघी से ठीक रखा कर।

✻ तू जब रेलवे लाइन को पार करने लगे तो पहले सावधानी पूर्वक दोनों ओर देख ले कि कोई गाड़ी इत्यादि तो नहीं आ रही।

✻ तू किसी को दण्ड देते समय उसके मुख पर न मार।

✻ तू दुर्गन्ध से बच क्योंकि वह शरीर और आत्मा दोनों के लिए हानिकारक है।

✻ तू पढ़ते समय अपनी पुस्तक को एक फुट से अधिक आखों के निकट न ला।

✻ तू बाज़ार में अपनी छड़ी घुमाता हुआ न चल, ऐसा न हो कि किसी को चोट लग

जाए।

✻ तू मार्ग में फलों के छिलके इत्यादि न डाल ऐसा न हो कि लोग उन पर से फिसलें।

✻ तू बहुत तीव्र प्रकाश की ओर न देख।

✻ तू प्रातःकाल की नियमित सैर से अपने स्वास्थ्य को बढ़ा।

✻ तू मल-मूत्र को बहुत विवशता के अतिरिक्त न रोक।

✻ यदि तुझे तैरना नहीं आता तो कभी गहरे पानी में न घुस।

✻ तू अग्नि और आतिश-बाज़ी से न खेल।

✻ तू रेल की खिड़की में से गर्दन और धड़ निकाल कर न बैठ।

✻ तू झुक कर बैठने की आदत से बच। न झुक कर लिख – पढ़।

✻ तू बाज़र मे आगे देख कर चल।

✻ तू कुर्सी या बेंच पर बैठकर आदत के तौर पर पैर न हिला।

✻ तू ध्यान रख के तेरी सांस से दुर्गन्ध तो नहीं आती।

✻ तू ऐसे स्थान पर वुज़ू न कर जहां लोग पेशाब करते हों।

✻ तू अपनी दाढ़ी-मूछों को साफ रख और उनको बिसांध (मलिन) न होने दे।

✻ तू यथासंभव चलती रेल में इंजन की ओर मुंह खिड़की से बाहर निकाल कर न देख ऐसा न हो कि इंजन का कोयला आंख में पड़ जाए।

✻ तू बीमारी में अपना उपचार कर तथा स्वस्थ होने तक बार-बार करता रह।

✻ तू स्लेट की पेन्सिल, गोली, पैसे और कौड़ी इत्यादि को मुख में रखने की आदत न डाल।

✻ हे लड़की ! तू अपनी सुई को जगह-जगह न टाँक दिया कर।

✻ तू किसी की जूँठी सलाई अपनी आंख में न लगा।

✻ तू किसी की जूँठी मिस्वाक (दातुन) प्रयोग में न ला।

* तू जिस प्रकार अपने चेहरे को स्वच्छ रखता है उसी प्रकार अपनी गर्दन और पैरों को भी स्वच्छ रख।
* तू मुँह से सांस लेने की आदत छोड़ दे और नाक से सांस लिया कर।
* यदि तुझे कोई संक्रामक (छूतदार बीमारी) रोग हो तो स्वस्थ लोगों से ऐसा घुलमिल कर न बैठ कि वे खतरे में पड़ें।
* जब लुक़्मा (कौर) तेरे मुँह में हो तो किसी से बात न कर।
* हे उस्ताद ! तू काली खांसी, खसरा, चिकन पॉक्स और खुजली वाले विद्यार्थियों को स्वस्थ होने तक स्कूल में न आने दे।
* तू किसी भी नशे की आदत न डाल।
* हे विद्यार्थी ! यदि तुझे स्कूल के बोर्ड पर लिखा हुआ साफ दिखाई न देता हो तो ऐनकों वाले डाक्टर से परामर्श कर।
* तू पुकार-पुकार कर पढ़ने की आदत न डाल, नहीं तो तेरा मस्तिष्क खाली और लोगों के कान बहरे हो जाएंगे।
* तू कान में पेन्सिल, होल्डर या तिनका इत्यादि खुजलाने या मैल निकालने के लिए न डाल।
* यदि तुझे अध्ययन के पश्चात् प्रायः सर दर्द हो जाता हो तो ऐनक की सोच।
* बाज़ारी फलों और तरकारियों में से जो चीज़ें धोई जा सकती हों तू उनको धोकर खाया कर।
* तू अपने वस्त्रों को पेशाब और गन्दगी के छींटों से बचा।
* तू जब किसी सभा में जाए तो सुगन्ध लगा कर जाया कर।
* तू हमेशा अपने जूते को पहनते समय झाड़ लिया कर।
* तू अपने कपड़े उजले और साफ रख।
* तू अपने जूते धूप में न छोड़ अन्यथा वे सिकुड़ कर तंग

हो जाएंगे।

* तू रोहों अर्थात कुकरों के रोगी का रुमाल और तौलिया प्रयोग न कर।
* तू गर्मियों के धूप में नंगे सिर न फिर।
* तू बदबूदार वस्तुएं खाकर सभाओं मे न जाया कर। उदाहरणतः कच्ची प्याज़, लहसन, मूली और हींग इत्यादि।
* तू भोजन करने से पूर्व अपने हाथ धो लिया कर।
* तू भोजन करने के पशचात् पुनः हाथ धो, कुल्ली कर और मुख साफ कर।
* तू बीमारी में बद परेहज़ी न कर ताकि शीघ्र स्वस्थ हो सके।
* तू हमेशा दाएं हाथ से खा और अपने आगे से खा।
* तू हुक़्क़ा, सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू, नस्वार, भंग, पोस्त, अफ़ीम, चरस, ताड़ी और सेंधी से बच।
* तू शराब को हराम समझ।
* तू हमेशा उत्तम प्रकार के भोजन ही न खाया कर।
* तू मांस खाने में अधिकता न कर।
* तू मिठास खाने में अधिकता न कर।
* तू खटास खाने में अधिकता न कर।
* तू मिर्च और गर्म मसाले खाने में अधिकता न कर।
* तू बहुत गर्म भोजन न खा, न बहुत गर्म चाय या दूध पी।
* यदि तुझे क्षमता हो तो चाय की आदत न डाल अपितु दूध पी।
* तू यदा-कदा तथा आवश्यकता के अतिरिक्त बर्फ और बहुत ठंडे पानी का प्रयोग न कर।
* तू पानी को तीन सांसों में पी और बैठ कर पी।
* तू अंधेरे में खाने - पीने से परहेज़ कर।
* तू गर्मी की दोपहर में बाहर से आकर तुरन्त पानी न पी।
* तू इतना खा कि शरीर का आहार हो, न कि शरीर स्वयं उसका आहार हो जाए।

* तू अपने बच्चों को मिट्टी खाने की आदत से रोक।
* तू हमेशा हल्के पेट खाना खाया कर।
* तू खाने-पीने की वस्तुओं में फूँक न मार, न उन पर मक्खी बैठने दे।
* तू सड़ा और बासी खाना न खा।
* तू कच्चे या गले-सड़े फल न खा।
* तेरे घर के खाने और पकाने के तांबे के बरतन बिना क़लई के नहीं रहने चाहिए।
* तू अपने पानी के घड़े मैल और काई से स्वच्छ रख।
* तू भोजन करते समय खूब चबा-चबा कर और धीरे-धीरे खा।
* तू बिना इच्छा और भूख के खाना न खा।
* तू दिन-रात में आठ घंटे से अधिक न सोया कर।
* तू यथासंभव रात को जल्द सो जाया कर तथा सुबह सवेरे उठ।
* तू औंधा होकर न सो।
* तू यथासामर्थ्य कपड़े से मुंह ढ़क कर न सो।
* तू रात को सोते समय पेशाब करके सोया कर।
* तू अपने बच्चों से सोते में बिस्तर पर पेशाब करने की आदत छुडाने का प्रयत्न कर।
* तू अपने मकान, अपने कमरे तथा प्रयोग में आने वाली वस्तुओं को हमेशा साफ रख।
* तू हिल-हिल कर न पढ़ा कर।
* तू ऐसे कोठे पर न सो जिसकी मुंडेर न हो।
* तू ऐसे स्थान पर न बैठ जहां धूल उड़ती हो।
* तू कच्चे फ़र्श पर झाड़ू देते समय या दिलवाते समय छिड़काव कर लिया कर ताकि मिट्टी न उड़े।
* तू छत की मुंडेर पर न बैठ।
* तू मार्ग में गन्दी वस्तुएं न फेंक और न मल-मूत्र कर।
* तू तंग जूता न पहन।
* तू ऐसा मकान किराए पर न

ले जिस में क्षय (तपेदिक) रोगी रह चुका हो।

* तू ऐसे मकान में रहने से बच जिसमें प्रकाश और हवा न आती हो, जहां दुर्गन्ध आती हो और जो नमी वाला हो।
* हे स्त्री ! तू अपना बुर्क़ा इतना ऊंचा बना कि रेल गाड़ी या सीढ़ियों पर चढ़ते हुए उलझ कर न गिरे।
* तू चलते रेल में सवार होने का प्रयास न कर।
* तू मार्ग में चलते समय अखबार या पुस्तक न पढ़।
* तू यथा शक्ति नंगे सिर न घूम।
* तू गीला कपड़ा न पहन।
* तू हर प्रकार के दुष्कर्म और दुराचार से बच अन्यथा तेरा स्वास्थ्य नष्ट हो जाएगा।
* हे विद्यार्थी ! तू मानसिक तथा कर्मों में सतीत्व धारण कर, वरना तू स्मरण शक्ति तथा ज्ञान प्राप्त करने वाली शक्तियों से हाथ धो बैठेगा।
* तू अश्लील साहित्य न पढ़ अन्यथा तेरा स्वास्थ्य खोखला हो जाएगा।
* तू अपने ऊपर अपनी शक्ति से अधिक भार न डाल।
* तू किसी औषधि कि शीशी को बिना लेबल के न रख।
* तू गलियों और बाज़ारों में दीवारों से लग-लग कर न चला कर, कहीं परनाले का पानी तेरे कपडों को ख़राब न कर दे।
* तू अपने लिबास के अतिरिक्त अपने जूतों को भी साफ रख, क्योंकि जूते भी तेरे लिबास का हिस्सा हैं।
* तू बन्द कमरे या स्नानगृह में आग न जला और न आग रख सिवाए इसके कि उसमें गैस निकलने की अंगीठी बनी हो।
* हे स्त्री! तू यथाशक्ति बहुत ऊंची एड़ी की गुर्गाबी न पहन क्योंकि वह हानिकारक है।
* तू रेल, ट्रामवे या तांगा में से कभी न उतर जब तक कि वह रुक न जाए।
* तू कभी रेल के डिब्बे के नीचे से न गुज़र।

2. इस्लामी सभ्यता और संस्कृति

- तू सभ्य और शिष्ट मनुष्य बनने का प्रयत्न कर।
- तू भेंट करते समय सलाम करने में पहल कर।
- तू मित्रों से हाथ मिलाया कर।
- तू अपने मकान और कमरे की वस्तुओं को क्रमशः और उचित स्थान पर रखा कर।
- तू इतना शोर न मचा कि घर वालों और पड़ोसियों को बुरा लगे।
- तू अपने जूते पृथ्वी पर घसीट या रगड़ कर न चला कर।
- तू सीटी बजाने की आदत न डाल (और लड़कियों के लिए तो यह आदत बहुत बुरी है।
- तू अपना पाजामा और तहबन्द (लुंगी) नाभि से ऊपर बांधा कर।
- हे विद्यार्थी ! तू पेन्सिल या होल्डर को न चबाया कर।
- तू लकीर का फक़ीर न बन।
- हे विद्यार्थी ! तू स्लेट पर लिखा हुआ थूक से न मिटा।
- जब तू किसी धूल में भरे कपड़े को झाड़ने लगे तो लोगों से दूर ले जाकर झाड़।
- हे लड़के ! तू यथाशक्ति अन्य लोगों के साथ एक बिस्तर पर न सो।
- तू साफ दरी पर मैले जूतों सहित न फिर।
- तू हमेशा समय पर स्कूल, कालेज, आफ़िस या नौकरी पर जाया कर।
- तू इस प्रकार न खा कि चपड़-चपड़ की आवाज़ लोगों को सुनाई दे।
- तू अपने कपडों से नहीं अपितु रुमाल से नाक साफ किया कर।
- हे स्त्री ! तू कंघी करने के पश्चात् अपने उतरे हुए बालों का गुच्छा इधर-उधर पर न फेंकती फिर।
- तू बाज़ार में चलते-चलते कोई वस्तु न खा।

* तू निर्धनों की मज्लिस का आनन्द भी लिया कर।
* तू सभा में डकार मारने, जमुहाइयाँ लेने, ऊंघने और बदबूदार हवा निकालने से बच और यदि सभा में किसी से ऐसा हो जाए तो उस पर हंसी न कर।
* जब तू किसी निमंत्रण में जाए तो निश्चित समय से देर करके न जा।
* जब तू खाने से निवृत हो तो यथासंभव वहां देर न लगा।
* हे लड़की ! तू अपने भाइयों के साथ एक बिस्तर में न सो।
* तू यथासंभव पान खाने की आदत न डाल।
* तू नाभि से नीचे और घुटने से ऊपर का शरीर लोगों के सामने नंगा न कर।
* तू ऐसा वस्त्र न पहन जिससे तुझ पर उंगली उठाई जाए।
* हे पुरुष ! तू अपना लिबास सादा और सूफ़ियों वाला रख।
* तू जुमा (शुक्रवार) को छुट्टी मना।
* तू अपने हाथ में छड़ी लेकर घर से बाहर निकला कर।
* तू जिस वस्तु को जहां से उठाए फिर वहीं रख दिया कर।
* तू सभा में हमेशा ऊँचे स्थान पर बैठने का प्रयत्न न कर।
* हे स्त्री ! तू हद से बढ़कर शृंगार न कर।
* हे स्त्री ! तू नामुहरम (अर्थात जिन लोगों से निकाह वैध है) पुरुष के साथ एकान्त में न बैठ।
* हे स्त्री ! तू उन पुरुषों को जिन से निकाह वैध है अपने पति की आज्ञा के बिना घर में न आने दे।
* तू अपनी नाक से हर समय सुड़-सुड़ न किया कर।
* तू रात को खुले लौ का दीपक और खुली आग को बुझा कर सो।
* तू दूसरे की पुस्तक पर उसकी आज्ञा के बिना निशान न लगा, न उस पर नोट लिख।

✻ तू पानी के बरतन को ढ़क कर रख।
✻ तू दूसरों के सामने अपनी नाक में उंगली न दे।
✻ जब तू किसी सभा में हो तो दांतो में तिनका न डाला कर।
✻ तूझे जमुहाई आए तो मुँह पर हाथ रख लिया कर।
✻ तू पीने के पानी में अपनी उंगलियां या हाथ न डुबो।
✻ तू सालन भरे हुए हाथ अपनी दाढ़ी से न पोंछा कर।
✻ तू लिखते समय कलम झटक कर आस-पास की वस्तुओं पर धब्बे न डाल।
✻ तू भोजन करके अपने हाथ इस प्रकार धो कि उंगलियों पर चिकनाई तथा हल्दी का निशान शेष न रहे।
✻ तू स्याही से अपने हाथों और कपड़ों को खराब न कर।
✻ हे पुरुष ! तू स्त्रियों की भांति बनाव, श्रृंगार में न लगा रह।
✻ तू मकान की दीवारों तथा फ़र्श को अपने थूक या पान की पीक से गन्दा न कर।
✻ तू अपने नाख़ून दांतो से न कुतरा कर।
✻ तू यथासंभव लिफ़ाफ़े को थूक से न चिपका अपितु पानी लगा।
✻ तू सभा में अपनी उंगलियां न चटका।
✻ तू किसी सभा में हो तो न लेट।
✻ तू आंखे मार कर या मटका कर बातें करने की आदत न डाल।
✻ तू अपना कपड़ा या पुस्तक मुँह से न चूसा कर और न कुतरा कर।
✻ तू यथासामर्थ्य अपनी बेटी का विवाह वयस्क[1] होने पर कर दे।
✻ तू जवान विधवा स्त्री के विवाह के लिए कोशिश करता रह।
✻ हे स्त्री ! तू ग़ैर मर्द के सम्मुख अपने सौंदर्य एवं श्रृंगार को

1. भारत में विवाह अधिनियम के अन्तर्गत लड़की के वयस्कता की आयु 18 वर्ष निर्धारित है। अनुवादक

प्रदर्शित न कर।

* तू आस्तीन से अपनी नाक न पोंछ।
* जब तू बाज़ार में से गुज़रे तो मार्ग पर चलने वालों को सलाम कर, किसी के मार्ग में बाधा न डाल और सड़क के एक ओर होकर चल।
* तू ऐसी अंजुमनों, सोसायटियों या कमेटियों का सदस्य बन जिनका कार्य निर्धनों की सहायता, नेकी का प्रचार तथा प्रजा को लाभ पहुंचाना हो।
* तू किसी ख़तरनाक हथियार (शस्त्र) का मुख किसी मनुष्य की ओर न कर।
* तू मस्जिदों में तथा पब्लिक जल्सों में अपने अच्छे कपड़े पहन कर उपस्थित हुआ कर।
* तू अपने बच्चों को बुरी बातों से रोक, अच्छी बातों की प्रेरणा दे और उनको कष्ट सहन करना सिखा।
* तू यथासामर्थ्य हमेशा सभ्य ढ़ग से शास्त्रार्थ (मुबाहसा) कर और व्यक्तिगत बातों पर हमला न कर।
* तू स्वयं ही बात करके स्वयं ही न हंसा कर।
* तू किसी जल्से में लोगों पर से फलांगता हुआ प्रवेश न हो।
* जो मनुष्य समृद्धि रखते हुए भी विवाह न करे वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की उम्मत में से नहीं।
* जो व्यक्ति बच्चों के डर से शादी न करे वह भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की उम्मत में से नहीं।
* यदि तुझे सामर्थ्य हो तो अपने पास एक घड़ी अवश्य रख।
* तू बाज़ार में नंगे सिर और नंगे पैर न फिर।
* जब दो व्यक्ति बातें कर रहें हों तो तू उनमें अकारण दखल न दे।
* तू अपने खाने – पीने की चीज़ों को मिट्टी और धूल से

बचा।

- ❊ तू अपने घर की छतों और दीवारों को मकड़ी के जालों से साफ रख।
- ❊ तू अपनी बातचीत में मूर्खतापूर्ण शब्दों का प्रयोग न किया कर।
- ❊ तू समाज में किसी गुप्त सोसायटी का सदस्य न बन।
- ❊ तू केवल एक पैर में जूता पहन कर न चल।
- ❊ तू अपनी रद्दी और कूडा-कर्कट हर स्थान पर बिखेरने की बजाए एक टोकरी में डाला कर।
- ❊ तू कष्ट देने वाले जानवरों (दतैया, सांप, बिच्छू इत्यादि) को कष्ट पहुंचाने से पूर्व ही मार दे क्योंकि यह पाप नहीं बल्कि पुण्य है तथा मनुष्यों पर दया कर।
- ❊ तू पुरुष होकर कोई आभूषण न पहन (चांदी की अंगूठी के अतिरिक्त)।
- ❊ तू खेल-कूद, सैर-सपारा और मनोरंजन केवल आवश्यकतानुसार कर।
- ❊ तू किसी के सौदे पर सौदा तथा किसी की मंगनी पर मंगनी न कर, जब तक पहले मामले का निर्णय न हो जाए (सिवाए नीलामी के)।
- ❊ यदि तू धनवान है तो अपने शरीर पर उस ने'मत की शुक्रगुज़ारी के लक्षण प्रकट कर।
- ❊ हे स्त्री ! तू किसी ग़ैर मर्द से हाथ न मिला।
- ❊ हे स्त्री ! तू पश्चिमी स्त्रियों की नकल में अपने बाल न कटवा।
- ❊ तू बिस्मिल्लाह, अलहम्दो लिल्लाह, जज़ाकल्लाह, माशा अल्लाह, इन्नालिल्लाह तथा अस्सलामो अलैकुम इत्यादि इस्लामी शब्दों को अपने घर में बोलने का रिवाज दे।
- ❊ तू लड़कियों के पैदा होने को बुरा न समझ, क्योंकि वे भी संसार के लिए उसी प्रकार आवश्यक हैं जैसे लड़के।
- ❊ तेरा व्यवहार लड़के और लड़कियों के साथ बराबर का हो।

- ❊ जब तू शौचालय में हो तो किसी से बातचीत न कर।
- ❊ जब तू किसी की दावत में जाए तो अपने सामने और निकट के भोजन में से हिस्सा ले।
- ❊ तू किसी निमंत्रण में कोई ऐसी बात या हरकत न कर जो दूसरों को बुरी लगे या जिस से उनको घिन आए।
- ❊ तू अपने खाने-पीने के बरतनों को साफ और स्वच्छ रख।
- ❊ जब तू किसी के यहां जा कर बाहर से खटखटा और घर वाले पूछें "कौन सज्जन हैं" तो यह न कहो कि "मैं हूँ" बल्कि अपना नाम बता।
- ❊ जब तू किसी पर्दादार के घर पर जाए तो द्वार से एक ओर खड़े होकर सलाम कह और अनुमति ले।
- ❊ हे स्त्री ! तेरे कपड़े इतने चुस्त न हों कि शरीर की बनावट उनमें से मालूम हो।
- ❊ हे स्त्री ! तेरे कपड़े इतने बारीक न हों के उन में से तेरा शरीर दिखाई दे।
- ❊ तू किसी ग़ैर लड़के के साथ एक चारपाई पर न सो।
- ❊ तू किसी के गले में बाहें डाल कर रास्ते में न चल।
- ❊ हे स्त्री ! तू अपने घर को नौकरों और बच्चों पर न छोड।
- ❊ तू मज्लिस में कानाफूसी न कर।
- ❊ तू लोगों की ओर उंगलियों से संकेत न कर।
- ❊ हे बालक ! तू अपने खिलौनों को सुरक्षित रख और उनको बर्बाद न कर।
- ❊ हे स्त्री ! तू अपने प्रत्येक बच्चे को पुस्तकें और खिलौने रखने के लिए अलमारी या सन्दूक दे और क्भी-क्भी उसे देख लिया कर कि उसमें कोई अनुचित या चोरी के वस्तु तो नहीं रखी।
- ❊ तू निगरानी रख कि तेरे बच्चे लोगों से कुछ मांगें नहीं।
- ❊ तू निगरानी रख कि तेरे बच्चे गाली तथा अश्लील शब्द मूँह पर न लाएं।

- ❊ यदि तू किसी के यहां मेहमान बनकर जाए तो अपना बिस्तर अवश्य साथ ले जा।
- ❊ बीमारी के अतिरिक्त तू यथासंभव ऐसे नखरे न कर कि मैं यह चीज़ नहीं खाता, वह चीज़ नहीं खाता, क्योंकि मनुष्य पर हमेशा एक तराह का ज़माना नहीं रहता।
- ❊ यदि तू किसी के यहां मेहमान के तौर पर जाए तो यथासमय सूचना दे।
- ❊ यदि कोई तेरे यहां मेहमान बनकर आए तो सर्वप्रथ्म उसे उसके सोने के स्थान और शौचालय का पता दे।
- ❊ यदि तू किसी के यहां मेहमान के तौर पर जाए तो जाते ही उसे बता दे कि लगभग तेरा कब तक ठहरने का इरादा है।
- ❊ तू यात्रा में अपने सामान से ग़ाफ़िल न हो।
- ❊ तू यथासंभव अकेला यात्रा न कर अपितु किसी को अपना साथी बना ले।
- ❊ तू यथासंभव ऐसे स्थान पर मेहमान बनकर न जा जहां मेज़बान या उसकी पत्नी और बच्चे बीमार हों।
- ❊ तू यथासंभव तू-तू करके बात न कर।
- ❊ तू यथासंभव अपने मेज़बान के यहां असमय न जा।
- ❊ जब तू सैर के लिए जाए तो एक या अधिक साथी साथ ले लिया कर।
- ❊ यदि किसी कमज़ोर यात्री को बस या रेल में स्थान न मिले तो तू उसकी सहायता कर।
- ❊ तू अपनी ऐनक को प्रयोग करने के पश्चात् हमेशा उसे उसके खाने में रख दिया कर।
- ❊ तू मज्लिस में अपने पैर न पसार।
- ❊ तू उधड़े हुए या फटे हुए कपड़े पहनकर बाहर न निकल।
- ❊ तू घर से बाहर जाने से पूर्व सामान्यतया दर्पण देख लिया कर।
- ❊ तू अपने गिरेबान के बटन

खोलकर बाज़ार में न घूम।

- ✻ तू घर के दरवाज़ों और खिड़कियों को धीरे से बन्द किया कर ताकि लोगों को कष्ट न हो।
- ✻ तू तकिया लगा कर भोजन न कर।
- ✻ तू घर की दीवारों और फ़र्श को चाक या कोयले इत्यादि से लकीरें मारकर गन्दा न किया कर।
- ✻ तेरे सिर और कपडों में जुएं होना, अत्यन्त अशिष्टता, गन्दगी और लापरवाही का लक्षण है।
- ✻ तू अपने से बड़ों तथा बराबर वालों से आप और छोटों से तुम कह कर बात किया कर।
- ✻ तू मार्ग पर एक ओर होकर चला कर।
- ✻ तू अपनी पत्नी तथा सन्तान का सम्मान कर।
- ✻ तू हैसियत और पद का लिहाज़ रख।
- ✻ यदि तू पुरुष है तो स्त्रियों का, यदि तू स्त्री है तो पुरुषों का विशिष्ट लिबास न पहन।
- ✻ तू पुरुष होकर स्त्रियों और हिजडों वाली हरकतें न कर।
- ✻ तू अपने गुरू, ससुर तथा बड़े भाई का पिता की तरह सम्मान कर।
- ✻ तू अपने विवाह के समय अपना समवयस्क खोज।
- ✻ तू बूढ़ों मे बूढ़ा, युवकों में युवा तथा बच्चों में बच्चा बनने का प्रयास कर।
- ✻ याद रख कि इस्लामी संस्कृति की नींव सच्चे भाई-चारे पर है न कि दुनियवी ठाठ-बाट पर।
- ✻ याद रख कि विवाह का उद्देश्य पत्नी की प्राप्ति है न कि धन।
- ✻ हे स्त्री ! तू अपने पति की अनुमति के बिना घर से बाहर न जा।
- ✻ हे स्त्री! तू अपने पति की अनुमति के बिना नफ़ली रोज़ा न रख।
- ✻ जब तू किसी को कोई वस्तु अस्थायी या उधार के तौर पर दे तो लिख लिया कर।

- ✻ तू अपने बरतनों पर अपना नाम खुदवा ले ताकि बदल न जाएं।
- ✻ हे स्त्री ! तू याद रख कि ख़ुदा ने पुरुष को स्त्री पर प्रधानता दी है।
- ✻ हे पुरुष ! तू याद रख कि पत्नी के साथ अच्छा बर्ताव करना तेरा कर्तव्य है।
- ✻ तू समय की पाबन्दी कर।
- ✻ हे स्त्री ! तू आवश्यकता पड़ने पर ग़ैर पुरुषों से पर्दे एवं लज्जा को दृष्टिगत रख कर बातचीत कर सकती है परंतु उसमें सकुचाहट, क्षेंप और भय न हो।
- ✻ यदि तुझे अपनी असलियत देखनी हो तो अपने दोस्तों के आइना में देख।
- ✻ तू अपना खर्च अपनी आमदनी के अन्दर कर।
- ✻ हे स्त्री ! तेरा कार्य ख़ुदा तआला की इबादत (उपासना), पति की आज्ञापालन तथा बच्चों की तरबियत है।
- ✻ तू विवशता के अतिरिक्त अपनी पत्नी से पृथक न रहा कर।
- ✻ तू और तेरा परिवार एक स्थान पर इकट्ठे दस्तरखान पर खाना खाएं।
- ✻ तू कोई ऐसा कार्य न कर जिसे देख कर लोगों को घिन आए।
- ✻ तू पराई या अर्धनग्न स्त्रियों के चित्रों से अपना घर या कमरा न सजा।
- ✻ तू छोटे बच्चों को न सता।
- ✻ तू जानवरों को अकारण कष्ट न दे।
- ✻ तू बहुत चीख-चीख कर न बोला कर।
- ✻ तू लोगों से मुस्कराते हुए सुशीलता का व्यवहार कर।
- ✻ तू नेक और सदाचारी लोगों से सुधारणा रख।
- ✻ तू साहस रख।
- ✻ तू राष्ट्रीय कार्यों में रुची ले।
- ✻ तू अपने देश से प्रेम कर।
- ✻ तू बुज़ुर्गों की सन्तान का आदर कर।
- ✻ तू अपने पिता के पूर्वजों तथा उनके मित्रों को अपना बुज़ुर्ग

समझ।

- तू लोगों के अधिकार समझ।
- तुझ में कोई बुरी आदत न पाई जाए।
- तू विधवाओं तथा अनाथों पर दया कर और उनकी सहायता कर।
- तू किसी का छोटे से छोटा उपहार स्वीकार करने में (किसी मस्लहत के अतिरिक्त) संकोच न कर।
- तू हकलों, अंधों, लंगडों, लूलों तथा विकलांगों की नकलें न उतार।
- तू किसी के चाल-चलन पर नुक्ताचीनी न कर।
- तू यथासंभव मुकद्माबाज़ी से बच।
- तू लोगों को मूर्ख बनाने से बच।
- तू शरीफ़ लोगों का अनादर न कर।
- यदि तू नौकर है तो अपना कार्य परिश्रम और ईमानदारी से कर।
- यदि तू अफ़सर है तो अपने किसी अधीनस्थ के अधिकार का हनन न कर।
- यदि तू अपनी आयु लम्बी करना चाहता है तो अपने निर्धन परिजनों से सदव्यवहार कर।
- तू स्त्रियों का सम्मान कर।
- जब कोई तुझ से बात करे तो उसकी ओर ध्यान दे।
- तू प्रयास कर कि तेरी बातचीत हमेशा स्वच्छ, सरल और बनावट से खाली हो।
- तू कभी किसी षड़यंत्र में शामिल न हो।
- तू लोगों के साथ सहानुभूति से व्यवहार कर।
- जब आवश्यकता हो, तू लोगों को नम्रतापूर्वक समझा।
- तू स्वयं को लोगों का सेव्य न समझ अपितु उन का सेवक समझ।
- तू दूसरों के आराम में विघ्न न डाल।
- तू फ़क़ीर और मांगने वाले को न झिड़क।
- तू अनाथ पर सख़्ती न कर।

- ✻ तू प्रयोग में आने वाली वस्तुओं के बारे में अपने पड़ोसियों तथा निर्धनों से कंजूसी न कर।
- ✻ तू सुन्दर लड़कों से अकारण मेल-जोल न रख।
- ✻ तू बुर्ज़ुगों के सामने नंगे सिर न बैठ।
- ✻ तू पड़ोसी को छोटी-छोटी भलाई से वंचित न रख।
- ✻ तू सामान्यतया सबसे और विशेषता निर्धनों से सुशीलता के साथ सद्व्यवहार कर।
- ✻ यदि तुझ से हो सके तो अत्याचारी से पीड़ित का अधिकार दिलाने का प्रयास कर।
- ✻ तू किसी तकिया कलाम की आदत न डाल।
- ✻ तू फ़कीर को रुपया-पैसा बच्चों के हाथ से भी दिलवाया कर।
- ✻ तू किसी हड़ताल में सम्मिलित न हो।
- ✻ तू कभी अपनी नागरिकता को परिवर्तित कर के प्रस्तुत न कर।
- ✻ तू अपने अतिथि का आदर कर।
- ✻ तू अपने मेज़बान पर किसी प्रकार का अनुचित भार न डाल।
- ✻ तू स्त्रियों का गाना न सुन, न उनका नाच देख।
- ✻ तू अपने बड़े भाई को पिता के स्थान पर और छोटे को अपने पुत्र के समान समझ।
- ✻ तू अपनी मां के चरणों के नीचे जो स्वर्ग है उसे प्राप्त कर।
- ✻ तू किसी के सामने अपने गुप्त स्थानों को नंगा न कर।
- ✻ कोई खाना खाता हो तो उसके खाने की ओर न तक।
- ✻ तू कभी-कभी अपने पड़ोसी को उपहार भी भेजा कर।
- ✻ यदि रेल गाड़ी या बस में तुझे तंगी हो तो भी अपने सहयात्रियों से न झगड़।
- ✻ जब तू उधार किसी से कोई वस्तु मांगे तो शीघ्र से शीघ्र उसे बिना मांगे वापस कर दे।
- ✻ तू कभी अपने वंशावली के

कारण लोगों पर गर्व न कर।

- ❊ तू अपनी सरकार का वफादार रह तथा किसी विद्रोह में भाग न ले।
- ❊ हे स्त्री ! तू घर में भी अपना सीना और सिर दुपट्टे से ढ़क कर रख कि यह तेरी लज्जा को क़ायम रखने का कारण है।
- ❊ संसार का प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी समय तेरे काम आ सकता है। अतः तेरी किसी से अनबन न हो।
- ❊ हे पुरुष ! तू रेशम के वस्त्र न पहन।
- ❊ तू धार्मिक विधान की हद बंदियों का ध्यान रखते हुए जिस देश में हो वहां की संस्कृति अपना सकता है।
- ❊ तू चांदी – सोने के बरतनों मे न खा।
- ❊ तू अपनी सन्तान को दरिद्रता या स्वाभिमान के विचार से क़त्ल न कर।
- ❊ तू राष्ट्रीय कार्यों में तन–मन से प्रयास कर।
- ❊ तू अन्य धर्मों के उपासना-गृहों की सुरक्षा में भी भाग ले और उनकी उचित धार्मिक स्वतंत्रता में कदापि बाधक न हो।
- ❊ हे स्त्री ! तू अपना सौन्दर्य ढ़कने के लिए ऐसा बुर्क़ा न बना जो सौन्दर्य ढ़कने के स्थान पर स्वयं सौन्दर्य हो, क्योंकि बुर्क़ा सौन्दर्य छिपाने के लिए होता है न कि स्वयं सौन्दर्य बनने के लिए।
- ❊ हे स्त्री ! तू अपने वस्त्रों तथा बुर्क़ा को सुगंध लगाकर बाज़ार में न चल।
- ❊ तू अपने नफ़लों और सुन्नतों को यथासंभव अपने घर में अदा कर ताकि तेरी पत्नी और बच्चे सही तौर पर नमाज़ पढ़ना सीखें।
- ❊ तू अपनी लड़कियों को दस–ग्यारह वर्ष की आयु से पर्दा करना आरंभ करा।
- ❊ तू मुसलमान स्त्री का ज़िबाह किया हुआ खा ले कि वह हलाल (वैध) है।
- ❊ तू जाति–पाति के चक्कर में न पड़।

* जैसे चटोरापन बुरा है उसी प्रकार खाने – पीने में कंजूसी भी बुरी है।
* अपने बुज़ुर्गों पर गर्व करना तथा स्वयं कुछ न होना स्वाभिमान के विरुद्ध है।
* तू मार्ग पूछने वाले को मार्ग बता।
* हे स्त्री ! तू अपनी लड़कियों को मुहल्ले के लड़कों के साथ न खेलने दे।
* तू अपने घर की सुन्दरता को नष्ट न कर चाहे वह किराए का ही हो।
* तू आजीविका कमाने के लिए कोई अवैध एवं घटिया व्यवसाय न अपना।
* तू अपने पास एक चाकू, एक पेन्सिल या कलम और एक नोट बुक अवश्य रखा कर।
* हे विद्यार्थी ! तू अपने हाथों तथा अपनी पुस्तकों और कापियों को स्याही के धब्बे से खराब न कर।
* जब तू किसी खुत्बे या लेक्चर में उपस्थित हो तो ख़ामोशी और ध्यान से उसे सुन तथा वक्ता की ओर अपना मुख रख।
* तू अपनी इब्नियत को अपने पिता के अतिरिक्त किसी अन्य की ओर सम्बद्ध न कर।
* तू विश्व – शान्ति की स्थापना के लिए प्रयत्न कर।
* तू अपने विचारों एवं परिस्थितियों को लिखने के लिए अपने लिए एक डायरी बना।
* तू हर समय थूकने की आदत न डाल।
* जब तू किसी दावत पर अकेला बुलाया जाए तो अपने बच्चों को साथ न ले जा।
* हे बिन ब्याही लड़की! तेरा सारा पत्र–व्यवहार तेरे माता–पिता की नज़र से गुज़रना चाहिए।
* तुझ में और तेरे ख़ानदान में जो दोष तथा रोग हैं तू वैसे दोषों वाले ख़ानदान में विवाह न कर।

* यदि तेरी एक से अधिक पत्नियां हों तो उन में न्याय से काम ले।
* जब तू किसी को पत्र लिखे तो आरंभ में बिस्मिल्लाह, अपने शहर का नाम, तथा पत्र लिखने की तिथि अवश्य लिख।
* तू स्पष्ट सरल और सुबोध इबारत लिखा कर।
* तू कुलेख में न लिख अपितु ऐसा सुलेख लिख कि साफ पढ़ा जा सके।
* तू आवश्यक बातों में परामर्श करने की आदत डाल।

3. धन सम्बन्धी लेन-देन और समझौते

* तू अपना धन हमेशा वैध तथा लाभदायक कार्य में ख़र्च कर।
* तौलने के समय पूरा तौल कर दे।
* मापने के समय पूरा माप कर दे।
* तू यथाशक्ति कोई व्यवसाय या दस्तकारी अवश्य सीख।
* तेरे कार्यों में कुप्रबंधन एवं क्रमहीनता न हो।
* तू लोगों के पत्रों के उत्तर शीघ्र से शीघ्र दिया कर।
* तू यथाशक्ति क़र्ज़ा लेने से बच।
* तू अपनी आय का एक भाग अवश्य बचाया कर।
* तू अपने व्यापार में ईमानदारी और सच्चाई से काम ले।
* हे व्यापारी ! तू अपने विज्ञापन में अतिशयोक्ति न कर।
* तू मानवीय स्वतंत्रता तथा समानता को न भूल कि समस्त मानव आदम की सन्तान हैं तथा तेरे भाई।
* हे हलवाई तू दूध में पानी न मिला।
* हे व्यापारी ! तू खोटी वस्तु को खरी कहकर न बेच।
* हे व्यापारी ! तू नक़ली घी को असली घी बताकर न

बेच।

* हे व्यापारी ! तू यह न कर कि नमूना और दिखाए तथा वस्तु और दे।
* हे व्यवसायी ! तू अपने वादे की पाबन्दी कर तथा जिस दिन का वादा है उस दिन कार्य पूर्ण करके दे।
* हे सुनार ! तू आभूषण में खोट न मिला।
* तू लोगों के झगड़ों में दख़ल न दे सिवाए इसके कि तेरे दख़ल से मैत्री की संभावना हो।
* तू अपनी तराज़ू, बाट, गज़ों तथा पैमानों को हमेशा ठीक रख।
* तू जानबूझ कर खोटे सिक्कों को खरा करके न चला।
* तू शरीअत के अनुसार वितरित होने वाले विरसा में गड़बड़ी न डाल।
* तू माताओं, बहनों और लड़कियों का भाग शरीअत के अनुसार अदा कर।
* तू अपनी पत्नी का महर खुशी से तथा शीघ्र से शीघ्र अदा कर।
* हे स्त्री ! तू यथासंभव ख़ुलअ का अपमान सहन न कर।
* तु यथासंभव अपनी पत्नी को तलाक न दे।
* तु यथासंभव अपनी पत्नी को न मार।
* तू अपने परिजनों का ध्यान रख तथा उनको कष्ट न पहुंचा।
* तू हमेशा आवश्यक बातों में परामर्श कर लिया कर।
* तू अपने मामलों में बुद्धि को बेकार न छोड़ अपितु उस से पूरा–पूरा काम ले।
* तू कभी अच्छी और लाभप्रद सिफारिश से इन्कार न कर।
* तू न हमेशा प्रतिशोध ले न हमेशा क्षमा कर अपितु सुधार को दृष्टिगत रख।
* तू अपना वोट किसी ऐसे व्यक्ति को न दे जो उसका पात्र न हो।
* तू निकाह के पश्चात् अपनी पत्नी के रोटी – कपड़े और ख़र्च का उत्तरदायी है।
* हे पुरुष तू अपनी पत्नी का

निगरान और संरक्षक है। अतः उस स्थान से स्वयं को कभी न गिरा।

✻ हे स्त्री तू अपने पति की आज्ञाकारी और उसके धन एवं सम्पत्ति की संरक्षक है।

✻ तू स्वयं अपने घर में भी आवाज़ देकर प्रवेश किया कर।

✻ तू मुकद्दमः बाज़ी या किसी अवैघ ढ़ंग से दूसरे का धन न खा।

✻ तेरी लिखित वसीयत हमेशा तेरे पास मौजूद रहनी चाहिए।

✻ तू कभी मुर्दों को बुरा न कह, क्योंकि इस से जीवितों को कष्ट होता है, उनका मामला ख़ुदा के साथ पड़ चुका है।

✻ यदि तू पूरा वेतन लेता है परन्तु मालिक के कार्य पर पूरा समय व्यय नहीं करता तो तू कमी करने वाला है।

✻ तू अवैघ वस्तुओं का व्यापार न कर।

✻ तू बिना टिकट यात्रा न कर।

✻ जिस स्टेशन पर प्लेटफार्म टिकट खरीदना आवश्यक हो वहां तू प्लेटफार्म टिकट खरीद या स्टेशन मास्टर से पूछे बिना अन्दर प्रवेश न कर।

✻ तू यात्रा पर जाने से पूर्व अपने समस्त सामान पर अपने नाम और स्थान की चिटें लगा दे तथा उनको सावधानीपूर्वक गिनकर नोट बुक में लिख ले।

✻ तू स्टेशन पर सामान को कुली के सुपुर्द करने से पूर्व उसका नम्बर अवश्य देख ले।

✻ हे कर्मचारी ! तू सरकारी स्टेशनरी अपने व्यक्तिगत कार्यों में प्रयोग न कर।

✻ तू सरकारी कर्मचारियों से अपना व्यक्तिगत काम न ले सिवाए इसके कि तू उनको इसका पूरा अतिरिक्त प्रतिफल दे और इस शर्त पर कि इस बात की तुझे अनुमति भी प्राप्त हो।

✻ तू रेल के निचली श्रेणी के टिकट पर उच्च श्रेणी में यात्रा न कर और यदि

आवश्यकतानुसार ऐसा करना पड़े तो अतिरिक्त किराया अदा कर।

- ✻ तू रेल कि यात्रा में तीन वर्ष से अधिक के बच्चे को मुफ़्त न ले जा।
- ✻ तू लोगों से और ख़ुदा से अपने आर्थिक मामले साफ रख।
- ✻ तू कभी अदायगी न करने की आदत न अपना। तू लोगों के अधिकारों को अदा करने में दृढ़ प्रतिज्ञ रह एवं पाबन्दी धारण कर।
- ✻ तू लोगों से अपने अधिकार लेने में नम्रता तथा विनम्रता दिखा।
- ✻ तू अपने दूकानदारों के क़र्ज़ों के बिल शीघ्र से शीघ्र या कम से कम मासिक अदायगी कर दिया कर।
- ✻ तू सिलसिले (जमाअत) के चन्दे नियमित रूप से अदा कर।
- ✻ तू यात्रा में किसी को यह न बता कि तेरे पास कितना रुपया है और कहां रखा है।
- ✻ हे स्त्री ! तू अपने पति से उसकी हैसियत से अधिक न मांग।
- ✻ हे स्त्री ! तू अपने पति के धन को (शरई आवश्यकता के बिना) उसकी इच्छा या उसकी आज्ञा के बिना ख़र्च न कर।
- ✻ तू मज़दूर की मज़दूरी उस का पसीना सूखने से पूर्व अदा कर नहीं तो कम से कम वादे के अनुसार अदायगी तो अवश्य कर।
- ✻ तू आयकर, चन्दों, ज़कात तथा वसीयत से बचने के लिए अपना धन और आय न छिपा।
- ✻ तू अपने जेब को जेब कतरे से रक्षा कर। विशेषतया डाकखाना और टिकट घर की खिड़की पर।
- ✻ स्मरण रख कि सरकारें और सोसाइटियां भी समझौंतों की ऐसी ही पाबन्द हैं जैसे कि लोग।
- ✻ तू लेन-देन और बर्तावों में किसी प्रकार की खराबी पैदा

न कर।

- ✻ तू अपने धन में से एक भाग प्रत्यक्ष तौर पर ख़र्च कर और एक भाग गुप्त तौर पर।
- ✻ तू जिस से क़र्ज़ ले वादे पर प्रसन्नतापूर्वक अदा कर दे।
- ✻ तू अनाथ का धन न खा सिवाए इसके कि तू स्वयं बहुत निर्धन हो। इस स्थिति में तू केवल वैध एवं उचित मज़दूरी ले सकता है।
- ✻ तू निर्धनों को दान दिया कर परन्तु किसी को दान देकर फिर उसे किसी प्रकार का कष्ट न दे।
- ✻ तू गन्दी, बेकार और खराब वस्तुओं को दान में न दे।
- ✻ तू शबे बरात में आतिशबाज़ी न चला।
- ✻ तू ब्याज को हराम समझ।
- ✻ यदि तू व्यापारी है तो तुझे वैध-अवैध व्यापारों तथा मामलों की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।
- ✻ वही तेरा धन है जो तू ने आगे भेजा, शेष धन वारिसों का है।
- ✻ यदि तू धनवान है तो अपने खर्चों का मासिक या वार्षिक बजट बना लिया कर।
- ✻ तू अपने धन तथा मूल्यवान वस्तुओं को सुरक्षित स्थान पर रख।
- ✻ हे कर्मचारी ! तू अपने मालिक के सौदे में से चोरी न कर।
- ✻ तू जुआ न खेल।
- ✻ तू शादी और शोक इत्यादि आयोजनों पर अपव्यय कदापि न कर।
- ✻ हे स्त्री! तू अपने घर के दैनिक ख़र्चों को एक कापी में लिख लिया कर।
- ✻ हे व्यापारी ! तेरा रेट और भाव अपने-पराए और छोटे-बड़े सब के लिए समान हो।
- ✻ तू शर्त न बांध।

4. ज्ञान

- ✻ तू जीवन पर्यन्त ज्ञान का अभिलाषी बना रह।
- ✻ तू अशिक्षित रहने से स्वयं को बचा।
- ✻ तू ज्ञान को कार्यरत होने के लिए सीख या दूसरों को सिखाने के लिए।
- ✻ तू अपनी सन्तान को स्वयं से अधिक विद्या पढ़ाने का प्रयत्न कर।
- ✻ तू हमेशा विद्या के प्रसार में प्रयास कर।
- ✻ तू अपने ज्ञान को तर्क-वितर्क से उन्नति दे।
- ✻ जो ज्ञान तेरी परिस्थितियों के अनुसार लाभप्रद न हो या हानि प्रद हो उसे न सीख।
- ✻ तू लाभप्रद ज्ञान को कभी गुप्त न रख।
- ✻ तू किसी न किसी विद्या या फ़न में दक्षता प्राप्त कर।
- ✻ स्मरण रख कि कर्म से ज्ञान जीवित रहता है न कि केवल कंठस्थ करने से।
- ✻ तू प्रतिदिन कुछ समय अपने ज्ञान सम्बंधी अध्ययन के लिए अवश्य निकाल।
- ✻ तू परीक्षा में कभी नकल न कर।
- ✻ ज्ञान की जो बात तुझे न आती हो उसे पूछने में संकोच न कर।
- ✻ तू हर उम्र में कोई न कोई लाभप्रद विद्या सीख सकता है।
- ✻ तू उच्च स्वर में अध्ययन करने की आदत न डाल।
- ✻ तू अपनी सन्तान के लिए बहुत सा धन छोड़ जाने की अपेक्षा से यह उत्तम है कि तू उनको अच्छी शिक्षा दिलाए।
- ✻ हे विद्यार्ती ! तू कभी अपने स्कूल या कालेज से अनुपस्थित न रह।
- ✻ हे स्त्री ! तेरी लड़की के लिए आवश्यक है कि वह शिक्षित एवं धार्मिक होने के अतिरिक्त घरेलू कामकाज, भोजन पकाना, सिलाई

इत्यादि भी जानती हो।

* यदि तेरी पत्नी अनपढ़ है तो उसे पढ़ा।
* तू यथासामर्थ्य उत्त्म पुस्तकें खरीदता रह।
* तू किसी बड़े शहर में हो तो वहां की लायब्रेरी का सदस्य बन जा।
* जिस बात का तू स्वयं अनुभव न कर ले उसे बतौर प्रमाण दूसरे के समक्ष प्रस्तुत न कर।
* हे विद्यार्थी ! यदि तू स्कूल का कार्य घर आकर न करे तो तू मूर्ख है।
* हे विद्यार्थी ! यदि तू केवल स्कूल ही का कार्य घर पर करे तो तू मध्यम श्रेणी का विद्यार्थी है।
* हे विद्यार्थी ! तू स्कूल के कार्य के अतिरिक्त अपनी रुचि से अतिरिक्त लाभप्रद अध्ययन भी करे तो तू योग्य है।
* तू अपनी पुस्तकों की दीमक, चूहे, झींगुर तथा कीड़े से रक्षा कर।
* तू लिखते हुए सीधी पंक्तियां लिखने की आदत डाल।
* तू विद्वानों का आदर कर।
* जब तू कोई पुस्तक खरीदे तो पहले उसकी जिल्द बंधवा और अन्दर अपना नाम लिख तथा ऊपर पुस्तक का नाम लिख ले।
* तू अपनी जिल्द वाली पुस्तक को धूप और नमी से बचा अन्यथा वह टेढी हो जाएंगी।
* तू अपनी पुस्तक छोटे बच्चों के हाथ में न दे।
* तू विद्या प्राप्त करने के लिए यात्रा भी कर।
* तू यथासंभव अपनी पुस्तकें लोगों को अस्थायी तौर पर न दे अन्यथा अक्सर वापस नहीं आएंगी।
* तू हमेशा अपने गुरू का सम्मान कर चाहे तू उससे भी बडी श्रेणी प्राप्त कर ले।
* तू अपने ज्ञान में वृद्धि करने के लिए समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं को नियमित रूप से अपने अध्ययन में रखा कर।
* तू व्यर्थ वाद-विवाद से बच।

* तू ज्ञान को बुद्धिमत्ता एवं तीव्र बुद्धि का साधन समझ न कि मात्र आजीविका का साधन।
* तू अध्ययन के समय अधिक बातचीत न कर।
* मातृ भाषा के अतिरिक्त तू अपनी धार्मिक भाषा तथा समसामयिक शासक की भाषा को भी सीख।
* तू एक नोटबुक अपने पास रख जिसमें उपयोगी तथा स्मरणीय बातें लिख लिया कर।
* तू स्कूल में अपनी सन्तान की आयु कम करके न लिखा।
* तू सोच-विचार की आदत डाल।
* तू स्मरण रख कि इस युग में जितनी जानकारियां अखबार पढ़ने से मिल सक्ती हैं उतनी अन्य किसी माध्यम से नहीं मिल सकतीं।
* तू हमेशा बुद्धि से काम ले अन्यथा लूंज अंग या साधुओं के सूखे हुए हाथ की तरह हो जाएगा।
* तू केवल किताब का कीड़ा न बन अपितु कर्म पर भी बल दे।
* हे गुरू ! तू पुरुष लड़कों से अपना शरीर न दबवा।
* तू हमेशा अपनी बुद्धि और बोध को बढ़ाने में लगा रह।
* तू किसी व्यक्ति की पुस्तकों, पत्र तथा कागज़ों को उसकी अनुमति के बिना न देख।
* तेरे लिए रुपया एकत्र करने तथा सम्पत्ति बनाने से यह उत्तम है कि अपनी सन्तान को विद्या सिखाए तथा उनकी अच्छी तरबियत करे।
* तू सीख और अनुभव प्राप्त करने के लिए भी सैर तथा यात्रा किया कर।
* तू अपने बच्चों को किसी बात के लाभ-हानि तर्कों के साथ समझा न कि केवल आदेश से।
* तू स्मरण रख कि पहले से बचाव उपचार से बेहतर है।
* तू ज्ञान सीख और गुरू बन जा।

5. आचार – व्यवहार

* तू स्मरण रख कि प्रयत्न एवं परिश्रम से मनुष्य के आचार-व्यवहार परिवर्तित हो सकते हैं।
* तू अपने आचार-व्यवहार ठीक रख ताकि लोग तुझ से लाभ प्राप्त कर सके।
* तू केवल शारीरिक आराम तथा ऐश्वर्य को अपना उद्देश्य न बना।
* तू बुद्धिमान बन परन्तु चालाक न बन।
* तू धन आर्जित कर पर लालची न बन।
* तू बुज़ुर्गों तथा माता-पिता की प्रसन्नता का अभिलाषी रह और उनकी आज्ञा का पालन कर।
* तू दृढ़ तथा आत्मनिर्भर बन।
* तू परिश्रम की आदत डाल।
* तू नामुहरम (उन स्त्रियों के साथ जिन से विवाह वैध है) अकेला न बैठ।
* तू गाने-बजाने में रुचि न रख।
* तू अश्लील बात करने, अश्लील लिखने तथा अश्लील महफ़िलों से बच।
* तू यथासंभव किसी से न मांग।
* तू गम्भीरता पूर्वक विनम्रता धारण कर।
* तू अशिष्ट मनुष्य की संगत से भाग।
* तू किसी के लिए वह बात पसन्द न कर जो स्वयं तुझे पसन्द न हो।
* तू झूठ को सच्चाई के रंग में प्रस्तुत न कर।
* तू नामुहरम स्त्रियों से बात करते समय अपनी दृष्टि निची रखा कर।
* तू किसी के हृदय को अनुचित तौर पर कष्ट न पहुंचा।
* तू हमेशा हलाल (वैध) कमाई खा।
* तू रिश्वत न ले।
* तू अपनी प्रतिज्ञा और वादा को पूरा कर (यदि वह

शरीअत के विरुद्ध न हो)।

- ✻ तू किसी आदत का ग़ुलाम न बन।
- ✻ तू सादा जीवन अपना।
- ✻ तू चोरी न कर।
- ✻ तू दुराचार न कर।
- ✻ तू क़त्ल न कर।
- ✻ तू कन्या वध न कर।
- ✻ तू डाका न मार।
- ✻ तू आवश्यकता से अधिक ख़र्च तथा फ़ुज़ूलख़र्ची न कर।
- ✻ तू झूठ न बोल।
- ✻ तू दु:ख और मुसीबत पर सब्र रख।
- ✻ तू चुग़ली न कर।
- ✻ तू अमानत में खियानत न कर।
- ✻ तू उपकार का धन्यवाद कर।
- ✻ तू सुस्त एवं आलसी न हो।
- ✻ तू आत्मसंतुष्टि धारण कर।
- ✻ तू सदाचारियों की संगत अपना।
- ✻ तू ग़रीबों और कमज़ोरों की मदद कर।
- ✻ तू अपने शरीर से ज़्यादा अपने विचारों को पवित्र रख।
- ✻ तू अपने पड़ोसी से अच्छा बर्ताव कर।
- ✻ तू किसी को अकारण कष्ट न दे।
- ✻ तू आडम्बर और दिखावे से बच।
- ✻ तू किसी को तुच्छ और नीच न समझ।
- ✻ तू किसी को गाली न दे।
- ✻ तू हमेशा मानवजाति की सहानुभूति एवं भलाई में लगा रह।
- ✻ तू सहनशीलता अपना।
- ✻ तू किसी का हक़ न मार।
- ✻ तू उपहास एवं हंसी ठट्ठा न कर।
- ✻ तू व्यर्थ कार्यों से बच।
- ✻ तू हमेशा सचेत और सावधान रह।
- ✻ तू व्यर्थ बातें न कर।
- ✻ तू सख्त क्रोध आने पर चुप हो जाया कर।
- ✻ तू बुजदिल (कायर) न बन।
- ✻ तू कभी नाउम्मीद न हो।
- ✻ तू न चुग़ली कर न सुन।
- ✻ तू किसी को बद-दुआ न दे।

* तू वादा ख़िलाफ़ी न कर।
* तू फ़साद न कर और न लड़ाई - दंगों में भाग ले।
* तू ईर्ष्या न कर।
* तू अपनी ख़ुदा की प्रदान की हुई शक्तियों को नष्ट न कर।
* तू अनावश्यक भोजन में दोष न निकाल।
* तू घमण्ड से अकड़ कर न चला कर।
* तू जल्दबाज़ी न कर।
* तू नेकी में दूसरों से आगे बढ़ने का प्रयास कर।
* तू हर नेकी शौक से कर और हर बुराई को घृणा के साथ त्याग दे।
* तू दर गुज़र और पर्दापोशी की आदत डाल।
* तू मेहमानदारी कर।
* तू दूसरे का पत्र बिना आज्ञा न पढ़।
* तू जीभ के चस्कों तथा चटोरपन से बच तथा अपने परिवार को भी इन से बचा।
* ख़ुदा के आदेश के बिना तू अपने गुरुओं, बुज़ुर्गों तथा माता-पिता की अवज्ञा न कर।
* तू गर्व और अहंकार न कर।
* तू उपकार करके न जता।
* तू मन में द्वेष न रख।
* तू लोगों की बात काटने की आदत त्याग दे।
* तू अनुचित शत्रुता न कर।
* तू दोग़लेपन की बातों से बच।
* तू चाटुकारिता से बच।
* तू निर्लज्ज न बन।
* तू कंजूसी न कर।
* तू करुभाषी न बन।
* तू बदगुमानी न कर।
* तू द्वेष और अनुचित पक्षपात् न कर।
* तू असमंजस की आदत त्याग दे।
* तू लापरवाही न कर।
* तू लगाई-बुझाई से बच।
* तू जालसाज़ी न कर।
* तू बेवफाई न कर।
* तू ढीठपन न कर।
* तू कमीनगी और छिछोरापन से बच।
* तू अपने मुँह अपनी प्रशंसा करने से बच।

* तू आरोप और लांछन लगाने से बच।
* तू कुदृष्टि डालने से बच।
* तू व्यर्थ खेल जैसे शतरंज, ताश, गंजिफ़, चौसर इत्यादि न खेल।
* तू ऐयाशी से दूर भाग।
* तू छुप कर लोगों की बातें सुनने से बच।
* तू स्वयं पर विश्वास की आदत डाल।
* तू दूसरों पर भी विश्वास किया कर।
* तू रोगियों का हाल-चाल पूछ और ढ़ारस बँधाया कर।
* तू अपने परिवार वालों से प्रेम रख और यथाशक्ति उनकी सहायता कर।
* तू अपना दोष स्वीकार करने में कभी संकोच न कर।
* तू साहस और दृढ़ विश्वास अपना।
* तू साधारणतया अपने लिए प्रतिशोध न ले।
* तू न्याय को हाथ से न जाने दे।
* तू स्वाभिमान मनुष्य बन।
* तू दयाभाव को अपने दिल में जगाह दे।
* तू नर्मी और मित्रता वाला स्वभाव पैदा कर।
* तू निस्पृहता (अनिच्छा) का रंग भी पैदा कर।
* तेरे समस्त कार्य निष्कपटता से हों।
* तू सम्पूर्ण समय का सदुपयोग कर।
* तू हंसी – हंसी में भी झूठ न बोल।
* तू कभी किसी का लेख या कविता चुराकर अपने नाम से प्रकाशित न करवा।
* तू मुसीबत, गरीबी और बीमारी में बर्दाश्त का नमूना दिखा।
* तू व्यर्थ किस्सों, अश्लील दृश्यों तथा बुरे विचारों से स्वयं को बचा।
* तू नुक्ताचीनी की आदत से बच।
* तू फ़ुज़ूलख़र्ची से बच।
* तू ख़ुश्क और नीरस स्वभाव न बन।
* तू आवश्यकता के समय

पैवन्द वाला कपड़ा या पैवन्द वाला जूता पहनने से शर्म न कर।

* तू लोगों के दोषों की खोज न कर।
* तू उलाहना देने तथा कटाक्ष करने से बच।
* तू साहसी बन।
* तू गुटबन्दी से अलग रह।
* तू सत्य बात कहने से कभी न डर, पर उसे बुद्धिमत्ता के साथ प्रस्तुत कर न कि कठोरता एवं आशिष्टता के साथ।
* किसी मोमिन के लिए तेरे हृदय में द्वेष न हो।
* तू अपनी राय पर हठ न कर और लोगों को उसके मानने के लिए विवश न कर।
* तू अनुचित प्रशंसा से बच।
* तू कंजूस न बन।
* तू यदि जज या मजिस्ट्रेट है तो कभी न्याय को हाथ से न जाने दे।
* तू अपनी जाति और वंशावली पर गर्व न कर।
* हे स्त्री ! शर्म और सतीत्व तेरी शुद्ध और सर्वश्रेष्ट विशेषताएँ हैं।
* तेरी ज़बान, हाथ या कलम से किसी को अकारण कष्ट न पहुंचे।
* तू किसी अच्छे और लाभप्रद कार्य को अधूरा न छोड़।
* तू काम से बचने के लिए बहाना न किया कर।
* तू अपनी ज़िम्मेदारियों को दूसरों पर न डाल।
* तू शिष्टाचार ख़राब करने वाले सिनेमा और थियेटर न देख।
* तू रेडियो पर नामुहरम स्त्रियों के गाने सुनने से बच।
* तू नौकरों और अधीनस्थों (मातहतों) पर सख़्ती न कर।
* तू अपनी धन-दौलत के नुकसान पर अत्यधिक शोकग्रस्त और दुखी न हो।
* तू शत्रु से हमेशा सज्जनतापूर्ण प्रतिशोध ले।
* तू कभी गाली का उत्तर गाली से न दे।
* तू बुज़ुर्गों के सामने ऊंचे स्वर

में न बोल।

* तू अपने कथन और कर्म को बनावट से दूर रख।
* तू अधिक धन की लालच में ग्रस्त न हो।
* बुद्धिमत्ता जहां से भी मिले वह तेरा धन है उसे ले ले।
* तू अपने अवगुण और दुराचार लोगों से छुपा और स्वयं अपने दोष प्रकट न कर।
* तू प्रतिदिन कम से कम एक बार मृत्यु को अवश्य याद कर लिया कर।
* तू क्रोध में आपे से बाहर होने वाला न बन।
* तू गबन करने वाले का मददगार न बन।
* तू ऐसी बातों को न कुरेद जो यदि प्रकट हों तो तुझे बुरी लगें।
* तू मोमिन भाइयों का भार उठाने वाला बन।
* तू हर प्रकार की बातों को सुन, फिर उन में से श्रेष्ठ और अच्छी बातें अपना।
* तू कभी उस बात का दावा न कर जिस पर तेरा अमल न हो।
* तू आलसी न बन।
* तू इस नीयत से किसी पर उपकार न कर कि वह मुझे बढ़ा चढ़ा कर देगा।
* तू दूसरों के उपास्यों को (अर्थात मूर्तियों इत्यादि की जो खुदा के अतिरिक्त बना रखे हैं) गाली न दे, क्योंकि फिर उनकी उपासना करने वाले मूर्खतावश तेरे और तेरे महापुरुषों को गाली देंगे।
* यदि धर्म के मामले में माता-पिता की बात न भी स्वीकार करनी हो तो भी उन से शिष्टाचारपूर्वक बातचीत कर।
* यदि तू किसी से मिलने जाए और वह किसी कारण वश मिलने से इन्कार कर दे तो तू बुरा न मान।
* तू दूसरों के धन पर लालच की दृष्टि न डाल। याद रख कि मोमिन सादा स्वभाव होता है न कि ठग और चालाक।

* तू आत्महत्या न कर।
* तू अपने प्राणों को अकारण विनाश में न डाल।
* तू किसी मुसलमान पर ला'नत न कर न उसे दुराचारी कह।
* तू किसी लालच के कारण सच बात कहने से न डर (इस शर्त पर की वह फ़ित्ना-फसाद का कारण न बने)।
* तू मजाक़ में भी झूठ न बोल।
* तू किसी से ऐसा मजाक़ न कर जो उसे बुरा लगे।
* तू अपने दिल को विनम्रता सिखा परन्तु उसे अपमानित न कर।
* तू सच बोल, किन्तु ऐसा नहीं कि अपने या लोगों के दुर्गुण वर्णन करता फिरे, क्योंकि कुछ सच भी उपद्रव पैदा करने का कारण होते हैं।
* तू अपने, आचार-व्यवाहार में मध्यमार्ग (सरलाचार) अपना।
* तू लोगों के साथ अपने व्यवहार में दया का पहलू सर्वोपरि रख।
* तू हर प्रकार के भड़ुवेपन और अश्लीलता से बच।
* जो स्वाभाविक गुण तथा आकर्षण ख़ुदा ने तुझ में विशेष तौर पर रखे हैं उन को नष्ट न कर बल्कि उनको सदाचार पर चला, क्योंकि उन्हें व्यर्थ पैदा नहीं किया गया।
* जब तक तू स्वयं उन से महान न हो जाए किसी महा-पुरुष पर ऐतराज़ न कर।
* तू हर बात का नकारात्मक पहलू ही न लिया कर।
* तू शारीर की देखभाल और स्वच्छता में इतनी अतिशयोक्ति न कर कि शिष्टाचार के सुधार में कमी रह जाए। न शिष्टाचार के बारे में इतनी अतिशयोक्ति कर कि उपासना (इबादत) में कमी रह जाए।
* तू उपासना (इबादत) में इतनी अतिशयोक्ति न कर कि तू उकता जाए।

- ✻ तुझ पर तेरे ख़ुदा का भी हक़ है और तुझ पर सृष्टि का हक़ है और तुझ पर तेरे परिवार वालों का भी हक़ है तथा तुझ पर तेरा स्वयं का भी हक़ है और तुझ पर तेरे देश और सरकार का भी हक़ है। अतः तू ये समस्त हक़ अपनी श्रेणी और समय के अनुसार अदा कर।
- ✻ तू दिख़ावा से बच।
- ✻ तू कोई नसीहत सुनकर तुरन्त उसके मुकाबले पर हठ का पहलू न अपना बल्कि इन्कार करने से पूर्व सोच-विचार कर।
- ✻ तू लोगों की खूबियों का क़द्रदान बन।
- ✻ याद रख कि सब से बड़ा जिहाद अपनी दुष्प्रवृत्ति से जिहाद है।
- ✻ तू हर समय भौंहें चढ़ाए रखने से बच।
- ✻ तू सहृदयता (सुरुचि) रखने वाला मनुष्य बनने का प्रयास कर न कि चिडचिडा।
- ✻ तू न अपना समय नष्ट कर न दूसरों का।
- ✻ तू ऐसा वादा कभी न कर जिसे तू पूरा न कर सके।
- ✻ जब तू सरकारी सामान का अमानतदार हो तो सरकार की उत्तम वस्तुओं को अपनी खराब वस्तुओं से तब्दील न कर।
- ✻ तू क़ानून की आड़ में गबन और बेईमानी न कर।
- ✻ हे स्त्री ! तू अश्लील साहित्य से बच अन्यथा वह तेरे सतीत्व को अपवित्र कर देगा।
- ✻ तू याद रख कि मुसीबतों और कष्टों के बिना तेरी नैतिक एवं आध्यात्मिक तरबियत असंभव है।
- ✻ तू किसी की गुमनाम शिकायत न कर।
- ✻ तू किसी व्यक्ति की हवा ख़ारिज होने पर न हंस।
- ✻ तू अपने पूरे दिन के कर्मों का हिसाब-किताब रात को सोते समय किया कर।
- ✻ तू अपने बच्चों को दूसरे के बाग का फल तोड़ने से मना

कर कि यह चोरी है।

- ✻ तू किसी की स्टेशनरी या पुस्तकें बिना आज्ञा न ले कि यह भी चोरी है।
- ✻ हे विद्यार्थी ! तू स्कूल की चाक अपने घर में न ला कि यह भी चोरी है।
- ✻ तू अपने माता-पिता की आज्ञा के बिना घर की वस्तुओं पर अधिकार न कर।
- ✻ तू परीक्षा में नकल न कर कि यह भी चोरी है।
- ✻ तू दूसरे धर्म वालों का भी दिल न दु:खा।
- ✻ तू अपनी खुराक, लिबास और रहन – सहन में हद से बढ़कर ख़र्च न कर परन्तु कंजूसी से भी काम न ले।
- ✻ तू जासूसी न कर।
- ✻ तू यथासंभव भीख मांगने से बच।
- ✻ तू अतिथि के लिए सामर्थ्य से बढ़कर तड़क-भड़क न कर कि यह शेखी है।
- ✻ तू अपने रोअया और कश्फों पर न इठला और न अहंकार कर।
- ✻ तू अपनी दुआ की स्वीकारिता के कारण घमण्ड न कर।
- ✻ यदि पूर्वजों ने कोई गलती की है तो तू उनका अनुसरण न कर बल्कि उन पर कटाक्ष भी न कर।
- ✻ तू अपने भाइयों और मातहतों को ढारस बंधा और उन को निराश होने से बचा।
- ✻ हे लड़के ! जब तुझे कोई गन्दी या पाप की बात सिखाए तो तू उसका मुकाबला कर।
- ✻ तू किसी धार्मिक पेशवा को बुरा न कह।
- ✻ तू अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार कर।
- ✻ तू जानवरों पर भी निर्दयता न कर।
- ✻ जब तू किसी को संकट में देखे तो ख़ुदा का धन्यवाद कर कि तू इस से सुरक्षित है।
- ✻ तू कोई रहस्य की बात सुने तो उसे लोगों से न कहता फिर।

* जब तू किसी के दोष को एक बार क्षमा कर दे तो फिर उसकी चर्चा न कर।
* तू लोगों के दोष और उनकी बुराइयां सुन कर प्रसन्न न हो।
* तू नेकी को अच्छी तरह अदा कर।
* तू नीचता से बच।
* तू विकलांगों तथा अपाहिजों की सहायता कर।
* यदि तू स्वाभाविक इच्छाओं को बुद्धि के अधीन कर दे तो फिर तू सभ्य और शिष्ट मनुष्य बन जाएगा।
* यदि तू बुद्धि को न्याय के मातहत कर दे तो फिर तू बाख़ुदा (धर्मात्मा) इन्सान बन जाएगा।
* तू ग़लती करने वालों की ग़लतियां क्षमा करने का अवसर हाथ से न जाने दे।
* तू बड़ों का सम्मान कर।
* तू छोटों पर नर्मी कर।
* तू अपनी ज़बान को क़ाबू में रख।
* तू यथासंभव अपना कार्य स्वयं किया कर।
* तेरे धन में न केवल भिखारी का भाग है अपितु खामोश ज़रूरतमन्द और बेज़ुबान पशुओं का भी है।
* तू सिबग़तुल्लाह अर्थात् सदाचरण अपने अन्दर पैदा कर।
* केवल ज़ाहिरी आवभगत का नाम आचरण नहीं है अपितु वे आदतें पैदा कर जो असली और सच्चे आचरण हैं अर्थात् ऐसे आचरण जिन में लोगों की भलाई और ख़ुदा की प्रसन्नता की अभिलाषा निहित हो।
* तू अपने दोषों का स्वयं सुधार कर ताकि दूसरे लोग तेरे दोष न निकालें।
* तू नेकी और बर्ताव करते समय केवल सहजाति तथा सहधर्मी पर ही न ध्यान दे, हां उनको प्राथमिकता दे सकता है।
* तुझ पर तीनों कानूनों का पालन करना अनिवार्य है – प्रकृति का कानून, शरिअत का कानून और शासन का

कानून।

* तू अपनी ग़लतियों को स्मरण रख ताकि पुनः वैसी ग़लती न हों।
* तू अपना स्वार्थ पूरा करने की आदत न अपना।
* तू व्यर्थ की गपबाजी मारने से बच।
* तू निरुत्साहित होने से बच।
* तू आलस्य को त्याग दे।
* तू लापरवाही की आदत न डाल।
* तू झगड़े और उपद्रव वाली बातों से बहुत बच।
* तू कमीने पन से बच।
* तू थोड़ी सी खुशी में फूल न जाया कर।
* तू थोड़ी सी नाराज़गी में आपे से बाहर न हो जाया कर।
* तू बहुरंगी मिज़ाज (अस्थिर चित्त) होने की आदत त्याग दे।
* तू किसी की हाँ में हाँ मिलाने की आदत छोड़ दे।
* जो कार्य तेरे सुपुर्द किया जाए उसे बेकार के तौर पर न टाल अपितु रुचि, परिश्रम और ढ़ंग के साथ कर।
* तू स्वास्थ्य को नष्ट करने वाली आदतों से बच।
* तू अपने बुज़ुर्गों से धृष्टता पूर्वक व्यवहार न कर।
* तू अनियमितता की आदत न डाल।
* तू संकुचित विचारों को त्याग दे।
* तू दिखावे की आदत न अपना।
* तू बुराई पर हठ न कर।
* तू प्रसिद्धि प्राप्ति की इच्छा छोड़ दे।
* तू प्रशंसा पाने की इच्छा न कर।
* तू लोगों का अपमान न किया कर।
* तू केवल धन के कारण किसी का आदर-सम्मान न कर।
* तू बेवफ़ाई की आदत से बच।
* तू अक्खडपन छोड़ दे।
* तू मुहंफट होने की आदत से बच।
* तू मूर्खतापूर्ण जोश न दिखा।

* तू अपने कार्यों को अनुचित ढ़ंग से न किया कर।
* तू अपने कार्यों में अरुचि न कर।
* तू मूर्खता से बच।
* तू छिछोरेपन से बच।
* ऐसा न हो कि तेरे पेट में कोई बात न पचे।
* तू चिड़चिड़ेपन की आदत न डाल।
* तू कुतर्क (उल्टा सीधा वाद-विवाद) न किया कर।
* तू ताक-झांक और रंडी बाज़ी से बच।
* तू नीच और छिछोरी हरकतों से बच।
* झूठा दिखावा और प्रदर्शन न कर।
* तू अकारण लोगों पर नुक्ताचीनी न कर।
* तू लोगों का उपहास करने से बच।
* तू स्वयं को अनुपकारी (कंजूस) होने से बचा।
* तू स्वार्थी न बन।
* तू अत्यन्त खामोशी और खुश्कपन न अपना।
* तू शक की आदत छोड़ दे।
* तू अपात्र को दान न दे।
* तू खिलते हुए चेहरे के साथ लोगों से मिला कर।
* तू लोगों से प्रेम और मुहब्बत का व्यवहार किया कर।
* तुझ में दोषों पर पर्दा डालने की आदत होनी चाहिए।
* तू योग्य लोगों का सम्मान कर और प्रोत्साहित किया कर।
* तू ईर्ष्यारहित सोच और प्रतिस्पर्धा की आदत डाल।
* तू किफ़ायत शिआरी (मितव्ययिता) अपना।
* तू यथासंभव अपना कार्य स्वयं कर।
* तू ईमानदारी और सुधारणा अपना।
* तू किसी हालत में न्याय को हाथ से न छोड़।
* तू हर बुराई से बचने का प्रयास कर।
* तू सहनशीलता और सहिष्णुता अपना।
* तू शिष्टाचार अपना।
* तू परिणाम सोचकर काम

करने वाला बन।

✻ तू हौसलामन्द बनने का प्रयत्न कर।

✻ तू अपनी भावनाओं को काबू में रख।

✻ तू सदाचार अपना।

✻ तू दृढ़निश्चयी बन।

✻ तू सुस्वाभाव बन।

✻ तेरे बातों में कुछ-कुछ हास्य का रंग भी हो।

✻ तू सादगी धारण कर।

✻ तू स्वच्छता प्रिय बन।

✻ तू अपने कार्यों में हौसला और दृढ़ प्रतिज्ञता धारण कर।

✻ तू अपने कार्य लगन और परिश्रम से कर।

✻ तू समय की पाबन्दी की आदत डाल।

✻ तू बुराई पर शर्मिन्दा हो और अपने दोष को स्वीकार कर।

✻ तू सीख प्राप्त करने की आदत डाल।

✻ तू हर समय उन्नति की चिन्ता में लगा रह।

✻ तू सुशीलता अपना।

✻ तू गंभीरता और संजीदगी धारण कर।

✻ तू सचेत बन।

✻ तू सत्य को खोज और सत्य को प्रकट करने में दिलेरी से काम ले।

✻ तू वफादारी की आदत को अपनी पहचान बना।

✻ तू उपकार करने वाला वजूद बन।

✻ तू पवित्रता तथा पवित्र विचारों वाला बन।

✻ तू अपने विचारों को ऊंचा रख।

✻ तू सभ्यता और शिष्टता सीख।

✻ तू बुज़ुर्गों की सेवा कर।

✻ तू विद्वानों तथा संयमियों का आदर सत्कार कर।

✻ तू मित्र पर उपकार करने वाला बन।

✻ तू हमदर्दी की आदत डाल।

✻ तू शिष्टाचार और समझदारी सीख।

✻ तू दर गुज़र करने की आदत डाल।

✻ तू मर्दानगी और वीरता धारण कर।

* हे डाक्टर! तू हमेशा सच्चा सर्टीफिकेट दे और अदालत में सच्ची गवाही दे तथा तेरी गवाही न केवल सच्ची अपितु हर पहलू से पूर्णयता सच्ची हो।
* तू हर व्यक्ति से नैतिकता का व्यवहार कर।
* तू सच्चाई को अपनी पहचान बना।
* तू प्रत्येक कार्य में नियमितता अपना।
* तू मितव्ययी बन।
* तू अपनी हालत और बयान में अनुकूलता रख।
* तू पत्नी, सन्तान और क़ौम की अच्छी तरबियत कर।
* तू लोगों से विनम्रता पूर्वक बातचीत कर।
* हे सास ! तू बहू के साथ नर्मी और प्रेम का व्यवहार कर।
* हे बहू ! तू सास के साथ सम्मान का व्यवहार कर।
* तू याद रख कि कभी कभी थोड़ी सी सुस्ती से बहुत सा नुकसान हो जाता है।

6. धर्म और धार्मिक शिक्षा

* तू ख़ुदा तआला को तौहीद (एकेश्वरवाद) की गवाही दे और स्वंय भी उसे समझ ले।
* तू पांच समय की नमाज़ समय पर और जमाअत के साथ अदा कर।
* तू रमज़ान के महीने के रोज़े रख यदि बीमार या मुसाफिर नहीं।
* तू ज़कात अदा कर यदि तू मालदार है (अर्थात यदि तेरे धन पर ज़कात अनिवार्य है)।
* तू हज कर यदि तुझ पर फ़र्ज़ है।
* तू अपने ईमान की रक्षा कर क्योंकि यह अत्यन्त मूल्यवान है।
* चाहिए कि तेरी रूह ख़ुदा की मस्जिदों में लगी रहे।

✻ चाहिए कि तेरा दिल ख़ुदा को याद करने से इत्मीनान पाए।

✻ तू केवल हलाल, पसन्दीदा और पवित्र भोजन खा।

✻ तू हमेशा ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने का प्रयास कर।

✻ तू अध्यात्मज्ञानी बन।

✻ तू कभी ख़ुदा तआला की शिकायत न कर।

✻ तू जब हज़रत मुहम्मद स.अ.व. का नाम ले या सुने तो सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कह।

✻ तू जब किसी अन्य पैग़म्बर का नाम ले तो कह कि अलैहिस्सलाम (उस पर सलामती हो)।

✻ तू जब किसी सहाबी का नाम ले तो कह रज़ियल्लाहो अन्हो।

✻ जब तू किसी मृत्यु प्राप्त धार्मिक महापुरुष का नाम ले तो रहमतुल्लाह अलैहि कह।

✻ तू ख़ुदा को अपना और सम्पूर्ण विश्व का स्रष्टा एवं पालनहार होने पर विश्वास कर।

✻ शरिअत के विरुद्ध फ़ैशनों को त्याग कर तू जिस देश में हो वहां का फ़ैशन धारण कर सकता है।

✻ तेरे लिए समस्त ज़रूरी धर्म, क़ुरआन, हदीस और मसीह मौऊद (अ) की पुस्तकों में मौजूद है।

✻ हे स्त्री ! सार्वजनिक मार्गों में ऐसा पर्दा न कर कि जब तू बाज़ार में निकले तो तेरा एक ओर का चेहरा लोग जाते हुए देखें और दूसरी ओर का वापिस आते हुए।

✻ तू हज़रत मुहम्मद स.अ.व. के खातमुन्नबिय्यीन होने पर ईमान ला।

✻ तू हज़रत मसीह मौऊद (अ) को ख़ुदा का ऐसा नबी और रसूल होने पर विश्वास कर जो आप (स) के उम्मती नबी हैं अर्थात् आप (स) के पूर्ण अनुसरण से उनको नबुव्वत मिली है।

✻ तू हज़रत मौलाना नूरुद्दीन

रज़ियल्लाहो अन्हो को मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का प्रथम ख़लीफा मान।

✻ तू हज़रत मिर्जा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहो अन्हो को मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दूसरा ख़लीफा और मुस्लेह मौऊद मान।

✻ तू अहमदी के अतिरिक्त कभी किसी अन्य के पीछे नमाज़ न पढ़।

✻ तू ग़ैर अहमदी का जनाज़ा न पढ़।

✻ तू कभी अहमदी स्त्री का निकाह किसी ग़ैर अहमदी पुरुष से न होने दे।

✻ तू इस्लाम या अहमदियत के प्रचार से कभी सुस्त न हो।

✻ याद रख कि ख़ुदा के निकट सारी इज़्ज़्त तक़्वा (संयम) में है।

✻ तू अपने ख्वाबों की क़द्र कर और उनको लिख लिया कर ।

✻ तू अपनने ख़ुदा को प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्यवान समझ।

✻ तू अपने ख़ुदा को अन्तर्यामी (परोक्ष का ज्ञाता) समझ।

✻ तू अपने ख़ुदा को अत्यन्त दयालु और कृपालु समझ।

✻ तू पवित्र क़ुरआन पर चिंतन किया कर।

✻ तू विश्वास रख कि तेरा ख़ुदा कभी अत्याचार नहीं करता।

✻ तू ईमान ला कि सब नबी निर्दोष (मासूम) हैं।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा हर दोष और त्रुटि से रहित है।

✻ तू ईमान ला कि तेरे ख़ुदा की हर विशेषता और हर काम प्रशंसनीय है।

✻ तू विश्वास कर कि ख़ुदा तआला का कोई साझीदार नहीं।

✻ तू प्रतिदिन प्रातःकाल पवित्र क़ुरआन की तिलावत (पाठ) आवश्य किया कर।

✻ तू अपने ख़ुदा के साथ अपने प्राण, सन्तान, पत्नी,धन तथा प्रत्येक वस्तु से अधिक प्रेम कर।

✻ तू ख़ुदा की ने,मतों का शुक्रिया अदा करने की

आदत डाल।

- ✻ तू आज्ञापालन कर।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरे ख़ुदा का कोई कार्य युक्ति और रहस्य से खाली नहीं।
- ✻ तू ख़ुदा तआला से अपने एकान्त में भी डर।
- ✻ तू धर्म में विवेक से काम ले और आँख मूँछकर अनुसरण करने से बच।
- ✻ तू रात के अन्तिम समय में तहज्जुद पढ़ने की आदत डाल।
- ✻ तू अपने प्रत्येक कार्य से पूर्व इस्तिखारः कर अर्थात् ख़ुदा से सहायता की दुआ मांग।
- ✻ तू तावीज़ – गन्डे और तंत्र-मंत्र से बच।
- ✻ तू अल्लाह के निशानों का आदर – सम्मान कर।
- ✻ तू हमेशा धर्म को संसारिकता पर प्राथमिकता दे।
- ✻ तू प्रत्येक विपत्ति और आवश्यकता के समय ख़ुदा के समक्ष गिर जाने और दुआ मांगने की आदत डाल।
- ✻ यदि तू हमेशा सच बोलने की आदत डाले तो तुझे स्वप्न भी सच्चे ही आएंगे।
- ✻ तू ख़ुदा पर ईमान ला।
- ✻ तू फ़रिश्तों पर ईमान ला।
- ✻ तू ख़ुदा की सब किताबों पर ईमान ला।
- ✻ तू ख़ुदा के सब रसूलों पर ईमान ला।
- ✻ तू क़यामत, प्रतिफल तथा दण्ड एवं स्वर्ग और नर्क पर ईमान ला।
- ✻ तू तक़दीर पर ईमान ला।
- ✻ तू धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने में सदैव प्रयासरत रह।
- ✻ तू अपनी कमज़ोरियों और पापों के लिए प्रातिदिन क्षमा याचना किया कर।
- ✻ तू अपने साथ अपने बुज़ुर्गों और परिजनों तथा जमाअत के लिए भी दुआ किया कर।
- ✻ तू इस्लाम और अहमदियत की उन्नति के लिए सदैव प्रयासरत रह।
- ✻ तू प्रतिदिन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लहो अलैहि वसल्ल्म और हज़रत मसीह मौऊद पर सलामती भेजा कर।

- ✻ तू पवित्र क़ुरआन के आदेशों को हर चीज़ पर प्रधानता दे।
- ✻ तू अपनी प्रकृति अपने ख़ुदा के स्वभाव की तरह बना।
- ✻ चैकीदारी या शिकार इत्यादी की अवश्यकता के अतिरिक्त शौक के तौर पर तू कुत्ता न पाल।
- ✻ तू बिस्मिल्लाह पढ़कर भोजन करना आरंभ किया कर।
- ✻ तू भोजन करके हमेशा अलहम्दोलिल्लाह कहा कर।
- ✻ तू प्रयास कर कि तुझे प्रत्येक अवसर की मस्नून दुआ याद हो।
- ✻ तू नेकियां कर और उनके करने का आदेश दिया कर।
- ✻ तू निकृष्ट बातों से बच और बचने का आदेश दे।
- ✻ तू अपने स्वामी का वफ़ादार सेवक बन।
- ✻ तू ख़ुदा के लिए प्रेम और ख़ुदा के लिए बैर का व्यवहार कर।
- ✻ तू बुज़ुर्ग और सदाचारी लोगों की संगत में बैठा कर।
- ✻ तू पैग़म्बरों तथा इस्लाम के वलियों की जीवनियों को अपने अध्ययन में रखा कर।
- ✻ तेरा रौब नेकी के कारण हो न कि अभिमान या धन के कारण।
- ✻ तू हर मिलने वाले को पहले सलाम करने का प्रयास कर।
- ✻ तू निजात (मुक्ति) को ख़ुदा की कृपा पर निर्भर समझ न कि केवल कर्म पर, किन्तु कर्म को कृपा का चुम्बक समझ।
- ✻ तू मुसलमानों के जनाज़ों मे यथासंभव सम्मिलित हो।
- ✻ तू दिन में कुछ समय ख़ुदा के समक्ष अकेला बैठने की आदत डाल।
- ✻ तू अपने उपकार करने वालों के लिए दुआ किया कर।
- ✻ तू अपने पर पवित्र क़ुरआन का अनुवाद और आशय सीखना अनिवार्य कर ले।
- ✻ तू सृष्टि की पूजा न कर।
- ✻ तू कब्र की पूजा न कर।
- ✻ तू ताज़ियः परस्ती (ताज़िय:दारी) न कर।
- ✻ तू पीर परस्ती न कर।

* तू पुनीत स्थानों एवं अवशेषों की पूजा न कर।
* तू मूर्तियों की पूजा न कर।
* तू हरामखोरी न कर क्योंकि हराम खाने वाले की दुआ स्वीकार नहीं होती।
* तू यथासंभव दिन में एक बार अपने ख़ुदा के सामने अवश्य आंसुओं से रो लिया कर।
* तू कब्रस्तानों में भी जाकर सीख प्राप्त किया कर।
* तू दुनिया की चिज़ों में ख़ुदा तआला की कारीगरी की सुन्दरता और उसके औचित्य तलाश किया कर।
* तू ग़ैर इस्लामी रीति-रिवाज और ग़ैर मुस्लिम क़ौमों के रस्म-व-रिवाज अपनाने से बच।
* तू दुनिया से दिल न लगा। बल्कि ख़ुदा से मिलने की रुचि पैदा कर।
* तू यहां के जीवन को अस्थायी समझ और आख़िरत (परलोक) के जीवन को अपना स्थायी निवास। इसलिए वहां के लिए जो सामान भी हो सके तैयार कर।
* तू जब भी अपने इस संसारिक जीवन के लिए दुआ मांगे तो साथ ही अपने परलोक (आख़िरत) के जीवन के लिए भी दुआ मांग।
* तू बुद्धिमान और सदाचारी लोगों के अतिरिक्त किसी को अपना घनिष्ठ मित्र न बना।
* तू जमाअत में फूट डालने का कारण न बन।
* तू अल्लाह तआला के उपकारों को याद करके उस से अपना प्रेम बढ़ा।
* तू पानी बिस्मिल्लाह कह कर पी और पीने के पश्चात् अल्हमदोलिल्लाह कह।
* तेरे प्रत्येक कर्म में निष्कपटता का रंग होना चाहिए।
* हे स्त्री ! तेरे सौन्दर्य से अधिक तेरे शिष्टाचार और तेरे शिष्टाचार से अधिक तेरा धर्म ख़ुदा के निकट स्थान रखता है।
* तू अपने माता-पिता के

साथ कठोरता न कर अपितु उनको उफ़ तक भी न कह।

❋ तू अज़ान सुनते ही नमाज़ की तैयारी कर।

❋ तू इशा की नमाज़ पढ़े बिना कभी न सो।

❋ तू किसी जीवित प्राणी को आग में न डाल।

❋ तू केवल साधनों पर कभी भरोसा न कर।

❋ तू अपनी समस्त आवश्यकताएं केवल ख़ुदा से मांग।

❋ तू ख़ुदा के अतिरिक्त किसी से दुआ न मांग।

❋ तू ख़ुदा के अतिरिक्त किसी की इबादत (उपासना) न कर।

❋ तू अपने ख़ुदा को अद्वितीय एवं अनुपम समझ।

❋ तू उस रिवाज पर न चल जो शरीअत के उद्देश्य के विपरीत हो।

❋ तू देव, भूत, प्रेत, चुड़ैल तथा जादू – टोने पर विश्वास न रख।

❋ तू नमाज़ियों के आगे से न गुज़र।

❋ तू यथासंभव किसी के लिए बद दुआ न कर।

❋ तू जब नमाज़ के लिए मस्जिद जा रहा हो तो मार्ग में इतना विचार कर लिया कर कि तू किन-किन नेकियों का उपहार ख़ुदा के लिए ले जा रहा है।

❋ तू नेकी की परिभाषा याद कर ले अर्थात् ख़ुदा के आदेशों को पूरा करना।

❋ तू ख़ुदा को उसके गुणों से पहचान, क्योंकि तू उसके अस्तित्व को नहीं समझ सकता।

❋ तू इस बात पर भी ईमान ला कि पवित्र क़ुरआन अन्तिम और पूर्ण शरीअत (धर्म विधान) है।

❋ तू इस बात पर भी ईमान ला कि प्रत्येक देश और जाति में नबी आते रहे हैं।

❋ तू इस बात पर भी ईमान ला कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सब नबियों से श्रेष्ठ हैं।

* तू इस बात पर भी ईमान ला कि वह्यी और इल्हाम का द्वार हमेशा खुला रहेगा।
* तू इस बात पर भी ईमान ला कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल्म के पश्चात आपका अनुसरण करने वाला नबी बिना नई शरीअत के आ सकता है।
* तू ईमान ला कि ख़ुदा के अतिरिक्त कोई किसी का पाप क्षमा नहीं कर सकता।
* तू इस बात पर भी ईमान ला कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम मसीह मौऊद और महदी मौऊद हैं।
* जब तुझे किसी बात में सन्देह हो तो ख़ुदा से दुआ करके अपने हृदय से फ़त्वा ले कि वह भी तेरा मुफ़्ती है।
* तू अपने हृदय के भ्रम लाहौला वला क़ुव्वता और अऊज़ुबिल्लाह पढ़ कर दूर कर।
* जब तेरे माता-पिता और बिरादरी का ख़ुदा के आदेशों से मुक़ाबला आ पड़े तो फिर तू अपने ख़ुदा को प्राथमिकता दे।
* तू अपने ख़ुदा को निशानों से पहचान न कि केवल बौद्धिक तर्कों से।
* तू ख़ुदा के प्रारब्ध (तक़दीर) पर राज़ी होना सीख ताकि ख़ुदा तुझसे प्रसन्न हो।
* तू शरीअत के आदेशों में ख़ुदा की ओर से दी हुई ढीलों और सुविधाओं को हार्दिक ख़ुशी से स्वीकार कर।
* तू ईमान ला कि ख़ुदा की क्षमा तेरे पापों से बहुत अधिक विशाल है।
* तू जान ले कि ख़ुदा की अवज्ञा ऐसा विष है जो रूह को तबाह कर देता है।
* यदि तू ख़ुदा से मिलना चाहता है तो तेरे लिए सबसे आसान समय रात का अन्तिम भाग है।
* तू जान ले कि दुआ के स्वीकार होने का सब से बड़ा माध्यम तक़्वा (संयम)

है।

* तू ख़ुदा के उपकारों को गिना कर ताकि तू उस के प्रेम में जाए।
* तू अल्लाह तआला को प्रत्येक स्थान पर उपस्थित और दृष्टा समझ।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा रहमान (अत्यन्त कृपालु) है अर्थात् बिना किसी कर्म के कृपा करने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा रहीम (अत्यन्त दयालु) है अर्थात् कर्म के बदले में बड़ी रहमत (दया) करने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा समस्त लोकों का रब्ब (पालनहार) है अर्थात् समस्त जहानों (लोकों) को पालने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मालिक यौमिद्दीन' है अर्थात कर्मफल दिवस का स्वामी है।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अल मालिक' है अर्थात् सब का बादशाह।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'क़ुद्दूस' है अर्थात् अत्यन्त पवित्र और पुनीत।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अस्सलाम' है अर्थात् हर प्रकार की सलामती देने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अलमोमिन' है अर्थात् हर प्रकार का अमन देने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अलमुहैमिन' है अर्थात् शरण देने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अलअज़ीज़' है अर्थात् सब पर विजयी।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अलजब्बार' है अर्थात् टूटे हुए को जोड़ने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अलमुतकब्बिर' है अर्थात् हर प्रकार की बड़ाई और महत्ता का स्वामी।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अलख़ालिक' है अर्थात् अनस्तित्व से अस्तित्व में लाने वाला (अदम में वुजूद

में लाने वाला)।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अल बारी' है अर्थात् जोड़-तोड़ करके बनाने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अलमुसव्विर' है अर्थात् हर प्रकार की आकृतियां (शकलें) बनाने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'ग़फ़्फ़ार' है अर्थात् क्षमा करने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'क़हहार' है अर्थात् रोब और दबदबे वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'वह्हाब' है अर्थात् बहुत दान करने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'रज़्ज़ाक' है अर्थात् असीमित आजीविका पहुंचाने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'फ़त्ताह' है अर्थात् बड़े विकल्प खोलने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अलीम' है अर्थात् बहुत ज्ञान वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'क़ाबिज़' है अर्थात् बन्द करने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'बासित' है अर्थात् खोलने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'ख़ाफ़िज़'है अर्थात् पतन करने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'राफिअ' है अर्थात् बुलन्द करने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुइज़्ज़' है जिसे चाहे सम्मान देता है।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुज़िल्ल'है अर्थात् जिसे चाहे अपमानित करता है।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'समीअ' है अर्थात् प्रत्येक आवाज़ को सुनने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'बसीर' है अर्थात् हर चीज़ को देखने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'हकम' है अर्थात् सही फ़ैसला करने वाला।

❊ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा

'अलअद्‌ल' है अर्थात् इन्साफ करने वाला।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'लतीफ़' है अर्थात् कृपालु और सूक्ष्मदर्शी।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'खबीर' है अर्थात् हर बात उसे ज्ञात है।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'हलीम' है अर्थात् बहुत धैर्यवान (सब्र करने) वाला।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अज़ीम' है अर्थात् बड़ी महानता वाला।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'ग़फ़ूर' है अर्थात् अत्यन्त क्षमा करने वाला।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'शकूर' है अर्थात् बहुत क़द्र करने वाला।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अली' है अर्थात् महान प्रतिष्ठाओं वाला।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'कबीर' है अर्थात् बहुत बड़ा।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'हफ़ीज़' है अर्थात् रक्षा करने वाला।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुक़ीत' है अर्थात् अन्नदाता।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'हसीब' है अर्थात् आवश्यकताओं को पूरा करने और हिसाब लेने वाला।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'जलील' है अर्थात् महाप्रतापी।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'करीम' है अर्थात् अति सम्माननीय।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'रक़ीब' है अर्थात् निगहबान (संरक्षक)।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुजीब' है अर्थात् दुआएं स्वीकार करने वाला।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'वासेअ' है अर्थात् उन्नती देने वाला।

✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'हकीम' है अर्थात् हिकमतों वाला।

* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'वदूद' है अर्थात् अत्यधिक प्रेम करने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मजीद' है अर्थात् महान वैभवशाली।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'बाइस' है अर्थात् मृत्योपरान्त एक जीवन देने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'शहीद' है अर्थात् सदैव और दृष्टा है।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'हक़' है अर्थात् सच्चा।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'वकील' है अर्थात् काम बनाने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'क़वी' है अर्थात् बलवान।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मतीन' है अर्थात् शक्ति शाली।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'वली' है अर्थात् समर्थक एवं सहायक
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'हमीद' है अर्थात् प्रत्येक विशेषताओं वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुहसी' है अर्थात् हर एक को अपने ज्ञान के घेरे में लेने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुब्दी' है अर्थात् पहली बार उत्पन्न करने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुईद' है अर्थात् दूसरी बार जन्म देने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुहयी' है अर्थात् जीवन देने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुमीत' है अर्थात् मृत्यु देने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'हय्य' है अर्थात् जीवित।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'क़य्यूम' है अर्थात् सब का थामने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'वाजिद' है अर्थात् अधिकार रखने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा

'माजिद' है अर्थात् श्रेष्ठता वाला।

* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'वाहिद' है अर्थात् एक।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अहद' है अर्थात् अकेला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'समद' है अर्थात् निस्पृह (बेनियाज़)।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'क़ादिर' है अर्थात् हर एक चीज़ पर सामर्थ्यवान।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुक़्तदिर' है अर्थात् पूर्ण प्रभुत्व वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुक़द्दिम' है अर्थात् आगे बढ़ाने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुअख़्ख़िर' है अर्थात् पीछे हटा देने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अव्वल' है अर्थात् सबसे पहले है।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'आखिर' है अर्थात् अन्त तक रहने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'ज़ाहिर' है अर्थात् सबसे अधिक प्रकट।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'बातिन' है अर्थात् सबसे अधिक सूक्ष्म।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'वाली' है अर्थात् स्वामी।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुतआली' है अर्थात् उच्चतम प्रतिष्ठा और शान वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'बर्र' है अर्थात् उपकारी।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'तव्वाब' है अर्थात् बार-बार दया दृष्टि करने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुन्तक़िम' है अर्थात् प्रतिशोध लेने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुनइम' है अर्थात् नेमतें प्रदान करने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अफ़ुव्व' है अर्थात् क्षमा करने वाला।
* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा

'रऊफ़' है अर्थात् नर्मी करने वाला।

- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मालिकुलमुल्क' है अर्थात् शासन का स्वामी।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'ज़ुलजलाल वल इकराम' है अर्थात् वैभव और प्रताप वाला।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुक़सित' है अर्थात् उचित फैसला करने वाला।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'जामिअ' है अर्थात् एकत्र करने वाला।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'ग़नी' है अर्थात् बेनियाज़ (स्वच्छन्द)।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुग़नी' है अर्थात् बे परवाह।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मानिअ' है अर्थात् रोकने वाला।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'अज़्ज़ार' है अर्थात् जिसे चाहे हानि पहुंचाने वाला।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'नाफ़िअ' है अर्थात् जिसे चाहे लाभ पहुँचाने वाला।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'नूर' है अर्थात् साक्षात प्रकाश।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'हादी' है अर्थात् मार्गदर्शक।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'बदीअ' है अर्थात् नई तरह उत्पन्न करने वाला।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'बाक़ी' है अर्थात् सदैव बाक़ी रहने वाला।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'वारिस' है अर्थात् सब का वारिस।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'रशीद' है अर्थात् भलाई सिखाने वाला।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'सबूर' है अर्थात् अवज्ञा पर धैर्य रखने वाला।
- ✻ तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा 'मुतकल्लिम' है अर्थात् इल्हाम तथा संवाद (कलाम) करने वाला।
- ✻ तू ख़ुदा के अस्तित्व में

किसी को भागीदार न बना।

❊ तू ख़ुदा के गुणों में किसी को भागीदार न समझ।

❊ तू ख़ुदा के कार्यों में किसी को भागीदार न समझ।

❊ तू ख़ुदा के सम्मान और उपासना में किसी को भागीदार न रख।

❊ तू स्मरण रख कि ईमान नेक काम के बिना ऐसा है जैसे पेड़ बिना पानी के।

❊ जब अवसर मिले तो तू रमज़ान में ऐतिकाफ़ में बैठ।

❊ तू रमज़ान में लैलुतुलक़द्र को तलाश कर और उसकी बरकतों से लाभ प्राप्त कर।

❊ तू स्मरण रख कि अब इस्लाम के अतिरिक्त कोई धर्म ख़ुदा के निकट मान्य नहीं।

❊ तू क़ुरआन से पूर्व समस्त इल्हामी किताबों पर संक्षिप्त तौर पर ईमान ला, परन्तु क़ुरआन का अनुसरण कर कि पहली समस्त किताबें अब निरस्त हो चुकी हैं।

❊ तू नेकी को केवल नेकी के लिए न कर कि यह नास्तिकों का मत है।

❊ तू नेकी को खुदा की प्रसन्नता और प्रतिफल पाने के लिए कर कि यह मुसलमानों का मत है।

❊ प्रत्येक धार्मिक मतभेद के समय तू ख़ुदा और रसूल के फैसले के आगे सर झुका।

❊ तू ख़ुदा के कलाम (अर्थात् क़ुरआन) का कुछ भाग अवश्य कंठस्थ कर।

❊ जब कभी कोई ख़ुदा का रसूल तेरे सामने अवतरित हो तो उसे मान लेने में शीघ्रता कर।

❊ यदि तू ख़ुदा से प्रेम करता है तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पूर्ण अनुसरण कर।

❊ तू मुसलमान नहीं हो सकता जब तक कि तू हर झगड़े में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अपना निर्णायक न बनाए और हार्दिक प्रसन्नता से उनका निर्णय स्वीकार न करे।

- ❋ तू ईमान रख कि समस्त नबी निर्दोष है अर्थात् जान बूझ कर वे कभी पाप और ख़ुदा का विरोध नहीं करते।
- ❋ तू कभी ख़ुदा की दया से निराश न हो।
- ❋ जब तेरे सम्मुख क़ुरआन पढ़ा जाए तो ध्यान से सुन और खामोश रह।
- ❋ तू समसामयिक के ख़लीफा की आज्ञा का पालन कर।
- ❋ तू समस्त नबियों के नेक नमूनों का अध्ययन कर।
- ❋ तू बुरे लोगों के बुरे अंजाम का भी अध्ययन कर उस से सीख पकड़।
- ❋ तू बिदअत (नई-नई रस्मो-रिवाज) से बच।
- ❋ तू प्रत्येक ग़लती या पाप के पश्चात् तुरन्त पश्चाताप कर, क्योंकि मरते समय पश्चाताप् स्वीकार नहीं होता।
- ❋ तू सदैव अल्लाह तआला के सानिध्य के साधनों की खोज करता रह तथा उसके मार्ग में परिश्रम करने की आदत डाल।
- ❋ तू अपना आत्ममंथन किया कर कि मैंने अपनी आख़िरत के लिए क्या कर्म किए हैं।
- ❋ तू रस्मों का पाबन्द न हो अपितु सुन्नत अर्थात् (आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्शों) का अनुसरण कर।
- ❋ तू इस बात पर ईमान ला कि तेरी समस्त इबादतें केवल तेरे अपने लाभ के लिए हैं। ख़ुदा को उनकी तनिक भी आवश्यकता नहीं।
- ❋ तू अपनी समस्त शक्तियों को ख़ुदा के मार्ग में ख़र्च कर।
- ❋ तू अपनी नमाज़ों में अनुनय-विनय की आदत डाल।
- ❋ तू नास्तिकों और मूर्खों की संगत से बच।
- ❋ तू धार्मिक कार्यों में गर्व तथा प्रतिस्पर्धा कर कि दूसरों से बढ़ जाए।
- ❋ तू अपनी मन्नत पूरी कर यदि शरिअत के विरुद्ध न हो।
- ❋ तू धर्म के बारे में कभी अधर्मियों का फैसला स्वीकार न कर।

* तू ख़ुदाई परीक्षा और आज़माइश के समय न घबरा अपितु क़दम आगे बढ़ा।
* तू इबादतों और सदका देने में दिखावा करने से बच।
* तू बहुत अधिक न हंसा कर अन्यथा तेरा हृदय मुर्दा हो जाएगा।
* तू प्रसन्न रहा कर अन्यथा तेरा हृदय निराशा और हताशा का शिकार हो जाएगा।
* तू धर्म की बातों के बारे में कभी हँसी, ठट्ठा और उपहास न कर।
* तू समझ और सँवार कर नमाज़ पढ़ा कर।
* तू बहस मुबाहसे में कभी सच के विरोध का पहलू न अपना।
* तुझे अपनी पूरी नमाज़ का अनुवाद आना आवश्यक है।
* तू हमेशा अपने परिवार को नमाज़ का आदेश देता रह।
* तू लोगों के लिए नेक नमूना बन।
* तू जुमा की अज़ान सुन कर अपना कारोबार और क्रय-विक्रय(ख़रीद-फरोख्त) बन्द कर दे और मस्जिद की राह ले।
* तू सदैव पवित्र और शुद्ध धन ख़ुदा के मार्ग में खर्च कर।
* तू धार्मिक ज्ञान (दीनी इल्म) अधिक से अधिक प्राप्त कर, क्योंकि विद्वान ही ख़ुदा से डरता है।
* तू अपनी बिरादरी को अपने प्रचार (तब्लीग़) में प्राथमिता दे।
* तू ख़ुदा के अतिरिक्त किसी और के नाम पर ज़िबाह किया हुआ न खा, कि वह हराम है।
* स्मरण रख कि इस्लाम में सारी आयु ब्रह्मचारी रहना अर्थात् विवाह न करना निषिद्ध है।
* तू विवाह तक़्वा (संयम) के क़ायम रखने और नेक सन्तान की प्राप्ति के लिए कर।
* हे स्त्री ! तू शरीअत के अनुसार पर्दा कर।
* तू ख़ुदा के निशानों पर

उपहास करने वालों की सभा में न बैठ।

✻ तू झूठी क़सम कदापि न खा बल्कि अच्छा है कि शरीअत की आवश्यकता के बिना क़सम बिल्कुल न खा।

✻ तू व्यर्थ क़सम खाने से बच।

✻ भविष्य के वादे के लिए तू हमेशा इन्शाअल्लाह कह कर वादा कर।

✻ तू ख़ुदा के अस्तित्व की जड़ के बारे में कभी बहस न कर।

✻ तू कभी ख़ुदा के गुणों की नितांत सूक्ष्म बातों की बहस मंठ न पड़।

✻ तू ख़ुदा की ने'मतों में यद्यापि विचार कर कि उनकी चर्चा ख़ुदा से प्रेम का कारण है।

✻ तू ख़ुदा का उपदेशक बन अर्थात् उसके नाम की बढ़ाई कर और उसके धर्म का शुभचिन्तक रह।

✻ तू मुसलमानों का उपदेशक बन अर्थात् उनका प्रत्येक भलाई के लिए शुभचिन्तक रह।

✻ तू रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का उपदेशक बन अर्थात् उनके सम्मान और उनके मिशन का शुभचिन्तक रह।

✻ तू हर मनुष्य का उपदेशक बन अर्थात् नेकियों का आदेश और घृणित बातों से मना करने का आदेश देकर उनका शुभचिन्तक रह।

✻ तू अपने मृत्यु प्राप्त माता-पिता तथा उपकारियों के लिए दुआ किया कर।

✻ तू अपने ख़ुदा पर हमेशा सुधारणा रख।

✻ तू अपने एकान्त के पलों में अपने रब्ब से उसी प्रकार बेतकल्लुफ़ी से बातें किया कर जिस प्रकार तू अपने मित्रों से करता है कि इसी का नाम ख़ुदा से बातें करना है।

✻ तू केवल अल्लाह तआला को समस्त साधनों का पैदा करने वाला और वास्तविक प्रभावी समझ।

✻ तू भ्रमों में न पड़।

- तू इस संसार को ही अपने लिए स्वर्ग बनाने का प्रयास न कर कि यह असंभव है।
- तू किसी पीर या शैख़ को बड़ाई का सज्दह न कर।
- तू न किसी क़ब्र के आगे झुक और न उस का तवाफ़ (परिक्रमा) कर, न उस पर ऐतिकाफ़ में बैठ।
- तू रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेशों के विरुद्ध कोई कार्य न कर।
- तू सूफ़ियों के मस्मरेजम या ध्यान के घेरे को इस्लाम धर्म का भाग न समझ।
- तू स्वयं पीर बन, पीर परस्त न बन और वली बन, वली परस्त न बन।
- तेरा स्वयं अपने ख़ुदा के साथ सीधा सम्बन्ध है, इसलिए तू कभी अपने और उसके मध्य किसी सृष्टि (मख़लूक) को माध्यम न बना।
- तू दज्जालियत और पश्चिमी देशों की विशेष रस्मों को अपने घर में प्रवेश न होने दे।
- स्मरण रख कि सदैव सच बोलने वालों को ही सच्चे स्वप्न आया करते हैं।
- स्मरण रख कि यदि संसार में ही तेरी हर एक इच्छा पूरी हो जाए तो शायद तू ख़ुदा से निःस्पृह और बाग़ी हो जाए।
- तू पवित्र क़ुरआन की तफ़सीर (व्याख्या) राय द्वारा करने से बच।
- यदि तू ख़ुदा तआला का सानिध्य चाहता है तो नफ़ल इबादतों पर ज़ोर दे।
- तू वुज़ू के साथ रहने की आदत डाल।
- तहज्जुद के बाद जो नफ़ल तेरे लिए श्रेष्ठ हैं वे चाश्त (सूर्य निकलने के बाद) के चार नफ़ल हैं।
- तू स्मरण रख कि ख़ुदा के मार्ग में धन की कंजूसी और प्राण का भय शिर्क (अनेकेश्वर वाद) की जड़ हैं।
- तू ख़ुदा की इस प्रकार इबादत कर कि मानो तू उसे देख रहा है अन्यथा कम से कम यह अवस्था तो हो कि वह तुझे देख रहा है।

✻ कोई व्यक्ति तेरा कितना ही बड़ा उपकारी हो फिर भी तू उसके कहने से या उसका लिहाज़ करके अपने ख़ुदा की अवज्ञा न कर।

✻ हो सके तो तू क़ादियान में अपना मकान बना क्योंकि यहां मकान बनाना وَوَسِّعْ مَكَانَكَ के ख़ुदाई आदेश को पूरा करता है और तेरी सन्तान का सम्बन्ध मर्कज़ से दृढ़ करता है।

✻ स्मरण रख कि धर्म के मामले में जब्र नहीं है अपितु अवैध है।

✻ जब तुझे इल्हाम हो या मारिफ़त (आध्यात्म ज्ञान) का कोई रहस्य मिले तो उसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बरकत का कारण समझ।

✻ तू क़ुरआन की आयतों को जन्तर-मन्तर के तौर पर प्रयोग न कर।

✻ तू किसी उचित और वैध कार्य से रुकने की क़सम न खा और यदि खा ली है तो उसे तोड़ दे तथा कफ़्फ़ारः अदा कर।

✻ तू यथासंभव नमाज़ प्रारम्भिक समय में पढ़ अन्यथा आनन्द और एकाग्रचित्तता की उम्मीद न रख।

✻ तू यथासंभव क़ादियांन के सालाना जल्से में उपास्थित हो।

✻ जब तू लोगों के साथ किसी जल्से में दुआ मांगे तो घुटने के बल बैठकर मांग कि यह सभ्यता का ढंग है।

✻ तू काबा की ओर अपने पांव न फैला।

✻ स्मरण रख कि बुज़ुर्गों की प्रसन्नता तेरे लिए दुआ और उनकी नाराज़गी तेरे लिए बद-दुआ है।

✻ तू जहां भी हो वहां की जमाअत अहमदिया से सम्बन्ध रख और स्थानीय अमीर (अगुवा) की आज्ञा का पालन कर।

✻ जब तुझे किसी अहमदी से दुःख पैदा हो जाए तो उसके लिए नियमित दुआ कर जब

तक कि वह दुःख दूर न हो जाए।

* तू अपने ख़ुदा के साथ अपने पूर्ण हृदय, पूर्ण शक्ति और पूर्ण बुद्धि से प्रेम रख।
* तेरे हृदय में जब भी नेकी की इच्छा उठे तो तुरन्त उसे कर क्योंकि यह फ़रिश्तों की प्रेरणा है।
* तू अपने अन्त:करण और जिहवा को ख़ुदा के स्मरण से तर (आर्द्र) रख और प्रचुरता के साथ आर्द्र रख।
* जब तू विवाह करे तो प्रत्येक ख़ूबी वाली स्त्री तलाश कर परन्तु धर्म को प्राथमिकता दे।
* तेरी अंतरात्मा (ज़मीर) आज़ाद पैदा की गयी है। अतः तू भी ख़ुदा के अतिरिक्त किसी का दास न बन।
* तेरी समस्त समृद्धि की जड़ तौहीद (एकेश्वरवाद) पर सच्ची आस्था और ख़ुदा तआला के साथ प्रेम का सम्बन्ध है।
* तू भी एक समूह का निगरान है और क़यामत में तुझ से न केवल तेरे बारे में पूछा जाएगा अपितु तेरे समूह के बारे में भी प्रश्न होगा।
* तू हर ज़रूरी कार्य करने से पहले इस्तिख़ारह की दुआ करने की आदत डाल।
* जब तुझे इस्तिख़ारः में कोई विषय ख़ुदा की ओर से ज्ञात हो तो तुझ पर अनिवार्य है कि उसी आदेश का अनुसरण करे अन्यथा फिर भविष्य में तेरा इस्तिख़ारः स्वीकार न होगा।
* तू बुज़ुर्गों और परिजनों से अपने लिए दुआएँ करवाया कर।
* तू सिलसिला अहमदिया में जवानी के प्रारंभ से ही वसीयत कर दे ताकि तू नेकी के बंधन में दृढ़पूर्वक बंधा रहे।
* तू ख़ुदा के स्मरण से बढ़कर किसी कर्म को न समझ।
* स्मरण रख कि तक़्वा (संयम) समस्त नेकियों की

जड़ और बुनियाद है और तक़्वा का अर्थ है रोब को स्थायी तौर पर अपने हृदय पर हावी रखना और उसकी अप्रसन्नता से भयभीत रहना।

* तू इमाम से व्यक्तिगत मन-मुटाव के कारण जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना न छोड़।
* तू निर्धनों और निराश्रयों (मिस्कीनों) की दुआएं भी लिया कर।
* तू कभी स्वयं को पवित्र और पुनीत न समझ, क्योंकि यह केवल ख़ुदा ही को ज्ञान है।
* यदि तू नमाज़ का इमाम है तो पीछे नमाज़ पढ़ने वालों की सुविधा का ध्यान रख और मध्यम श्रेणी की नमाज़ पढ़ा।
* तू अपने बच्चों को सात वर्ष की आयु से नमाज़ पढ़ना सिखा और दस वर्ष की आयु से उन से पूछ-ताछ कर।
* स्मरण रख कि मनुष्य के पैदा होने का मूल उद्देश्य ख़ुदा की आज्ञापालन तथा इबादत है। अतः तू भी उसका दास बन कर यह थोड़ी सी आयु गुज़ार दे।
* स्मरण रख कि भक्त और ख़ुदा का वास्तविक सम्बन्ध केवल दुआ से स्थापित होता है।
* जब तू बाहर से क़ादियान में अस्थायी तौर पर आए तो यथासंभव अपनी सब नमाज़ें मस्जिद मुबारक में अदा कर।
* तू अपने ख़ुदा की परीक्षा कभी न ले।
* दुआ की स्वीकारिता के कुछ विशेष अवसरों का क़ुरआन तथा हदीस में उल्लेख है। तू उन से अवश्य लाभ उठा।
* तू सदैव ऐसे मित्रों की खोज में रह जो वास्तव में अल्लाह वाले हों।
* तुझ पर अनिवार्य है कि सुबह की नमाज़ के पश्चात् एक निर्धारित भाग पवित्र क़ुरआन का अवश्य पढ़ा कर, क्रमशः, नियमित रूप से, अनुवाद सहित, वुज़ु

करके, लय के साथ तथा इस नीयत से कि मैं इस किताब को अपना पथ प्रदर्शक बनाने और अमल करने के लिए पढ़ता हुं।

* तू अपनी नमाज़ में अपनी भाषा में भी दुआ किया कर क्योंकि दुआ की स्वीकारिता के लिए यह उपाय बहुत प्रभावी है।
* तू आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्ल्म की हदीसों का अध्ययन अवश्य किया कर।
* तू हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों को जितना भी हो सके अपने अध्ययन में रख।
* तू अपने बच्चों को दुर्रे समीन के कुछ शे'र अवश्य कंठस्थ करा।
* धर्म के अधिकतर भाग बुद्धि के अनुकूल हैं और कुछ भाग बुद्धि से ऊपर हैं परन्तु विपरीत नहीं हैं। अतः प्रत्येक बात में अनुचित दख़ल देना उचित नहीं।
* धार्मिक बहसों को लड़ाई – झगड़े का कारण बनाने की अपेक्षा सच की तलाश तथा संजीदगी एवं मैत्री के साथ सत्य की खोज करना हज़ारों गुना बेहतर है।
* संकट में तू सब को याद आता है, किन्तु आराम में ख़ुदा को याद रखना बड़ी बात है।
* संसारिक कर्तव्यों को अदा करना भी उपासना है पर शर्त यह है कि नीयत ख़ुदा को प्रसन्न करने की हो।
* ख़ुदा का भय (तक़्वा) विवेक का प्रारम्भ है और उस की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए मिट जाना उसका अन्त।
* हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सदुपदेश है कि मुसलमान के लिए उत्तम जीवन वह है जो धार्मिक सेवा के लिए समर्पित हो।
* तू अपनी बग़ल और नाभि के नीचे के बाल बढ़ने न दे।

7. लैंगिक विषय

इस शीर्षक के अन्तर्गत ऐसी बातें पृथक लिख दी गई हैं जो लैंगिक अर्थात् पुरुषों तथा स्त्रियों के विशेष सम्बन्धों के विषय में हैं। यदि यह पुस्तक किसी लड़के या लड़की के लिए खरीदी जाए और उसको ऐसी बातों से अवगत कराना स्वीकार न हो तो इस पृष्ठ पर लेई से दूसरा सफेद कागज़ चिपका दो। (संकलनकर्ता)

* तुझ पर संभोग, मासिक धर्म (हैज़) तथा निफ़ास (अर्थात् वह रक्तस्राव जो प्रसूता के शरीर से बच्चा जनने के चालीस दिन तक आता रहता है) के पश्चात स्नान अनिवार्य है।
* हे स्त्री ! तू गर्भपात न करा सिवाए इसके कि तेरे प्राणों का खतरा हो।
* हे स्त्री ! तू मासिक धर्म के दिनों में ठण्डे पानी में हाथ न डाल और न ठण्डी जगह पर बैठ।
* तू मासिक धर्म और निफ़ास के दिनों में अपनी पत्नी के पास न जा।
* तू अपनी कामशक्तियों का संतुलन से अधिक प्रयोग न कर अन्यथा तेरी शारीरिक शक्ति समाप्त हो जाएगी।
* तू विवाह केवल कामवासनाओं के लिए न कर।
* तू अपने कामवासना संबधी अंगों को अवैघ तौर पर प्रयोग न कर अन्यथा वे यथास्थान प्रयोग के योग्य नहीं रहेंगे।
* तू पश्चिमी देशों के लोगों की भांति किसी नामुहरम (ऐसी स्त्री को जिससे निकाह वैध है) न चूम।
* हे पुरुष ! तू अपनी पत्नी की इच्छा के बिना बर्थ कण्ट्रोल न कर और वह भी वास्तविक आवश्यकतानुसार।
* तू वैचारिक व्यभिचार तथा काल्पनिक दुराचारों से बच अन्यथा संयमित (मुत्तक़ी)

नहीं रहेगा।

* चाहिए कि तेरी कामकसना सब पवित्र और वैध ढ़ग की हों।
* तू अपनी शर्मगाहों की रक्षा कर।
* रोगों और भूख–प्यास से टूटे नव जवानों को छोड़ कर सामान्यतया अविवाहित युवा वर्ग में कमज़ोरी का कारण अधिकतर वीर्य को नष्ट करने की आदत है।

हे अल्लाह

तू इस संकलन को स्वीकार कर तथा हम को इन बातों पर अमल करने की सामर्थ्य दे। आमीन !

मुहम्मद इस्माईल

Ver 2016.04.17/02